सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 13 ▪ ▪ अंक : 10 ▪ ▪ 5 जनवरी 2017 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

वीरायतन - राजगृही प्रतिष्ठा 17 फरवरी 17 को

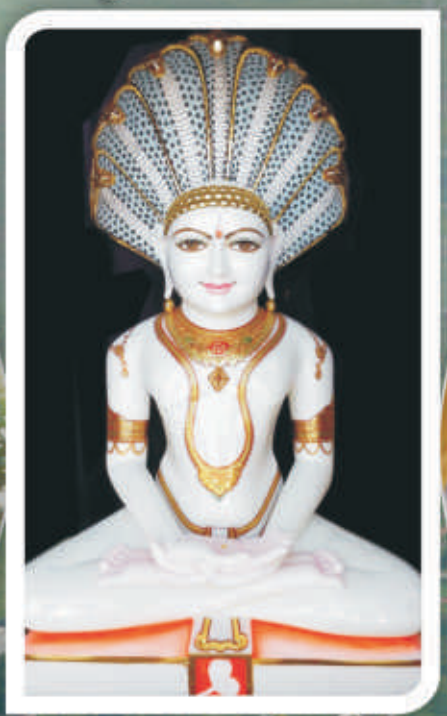

उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.

आचार्य श्री चन्दनाजी म.

वीरायतन का विहंगम दृश्य

पूज्या महत्तरा पद विभूषिता खानदेश रत्न शिरोमणि
श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वें जन्म दिवस एवं 65 वें दीक्षा वर्ष की
झलकियाँ जिन हरि विहार पालिताना

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो॥

– दशवैकालिक 6/11

सत्य भाषा भी यदि कठोर हो और प्राणियों का बड़ा घात करने वाली हो तो वह न बोली जाए, क्योंकि इस से पाप-कर्म का बंध होता है।

One should not utter harsh language which may lead to lilling, even if it is true, since it is sinful.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	04
2. पूज्य महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी	आचार्य जिननमणिप्रभसूरि	05
3. गुरुदेव की कहानियां	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	11
4. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
5. कुण्डकौलिक श्रावक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	15
6. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	17
7. भंसाली गोत्र की शाखाऐं	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	19
8. अम्बर में अधर : अन्तिरिक्ष पार्श्वनाथ	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	21
9. स्मृति शेष पू. प्र. श्री प्रमोदश्रीजी म.	डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	23
10. समाचार दर्शन	संकलन	26
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

पूज्य श्री की निश्रा में आगामी कार्यक्रम

ता. 29 जनवरी 2017 गुणायाजी तीर्थ धर्मशाला उद्घाटन

ता. 17 फरवरी 2017 राजगृही वीरायतन में अंजनशलाका प्रतिष्ठा

ता. 17 अप्रेल 2017 रायपुर देवेन्द्रनगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा

ता. 21 अप्रेल 2017 रायपुर संतोषजी बैद परिवार निर्मित सीमंधर मंदिर दादावाडी प्रतिष्ठा

ता. 1 मई 2017 दुर्ग पद्मनाभपुर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 13 अंक : 10 5 जनवरी 2017 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)
संपादक :
भूपत चौपड़ा

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

नवप्रभात

मैं दर्पण में अपना चेहरा देखता हूँ।

दर्पण के सिवाय चेहरा देखने का और कोई उपाय भी नहीं है।

शरीर के हाथ आदि अन्य अंगों को देखने में मुझे कोई समस्या नहीं है।

पर चेहरा देखना हो तो दर्पण का सहारा लेना ही होता है।

प्रश्न है कि मैं दर्पण में चेहरा क्यों देखता हूँ!

मैं चेहरे का रंग देखने... चेहरे का भूगोल देखने के लिये दर्पण नहीं देखता।

मैं बहुत ध्यान से... सूक्ष्म गहराई से चेहरा इसलिये देखता हूँ ताकि चेहरे पर लगा कोई दाग मुझे नजर आ जाये।

चिन्तन और आगे बढाता हूँ तो पाता हूँ कि केवल दाग देखता नहीं हूँ। दाग देखने के बाद उसे तुरंत मिटाने का प्रयास करता हूँ।

सच यह है कि मैं अपने चेहरे पर कोई दाग रखना नहीं चाहता और दर्पण के बिना दाग मुझे नजर आ नहीं सकता।

चमडी से निर्मित चेहरे पर दाग रह भी जायेगा तो चलेगा। पर आत्मा पर रहा दाग मुझे हर जनम में मैला करता रहेगा।

मुझे अपनी आत्मा पर लगे दागों को देखना है। उसके लिये दर्पण है परमात्मा! मंदिर में बिराजमान परमात्मा मेरे दर्पण है। उस दर्पण में मैं अपनी आत्मा को निहारता हूँ तो दाग ही दाग नजर आते हैं। पर मुझे दाग को देखना ही नहीं है अपितु उन्हें मिटाने का पुरूषार्थ भी करना है ताकि मैं बेदाग बन परमात्मा बन जाऊँ।

द्विशताब्दी उत्सव के पावन अवसर पर

पूज्य महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. सा.

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

महोपाध्याय क्षमाकल्याण 19वीं शताब्दी के महान् कवि होने के साथ–साथ शास्त्रज्ञ भी थे। वे जैन धर्म की प्राचीनतम परम्परा खरतरगच्छ के साधु थे। साधुत्व के संवाहक के रूप में उन्होंने प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। बीकानेर के पास केसरदेसर नामक गांव में वि.सं. 1801 में ओसवाल कुल के मालू गोत्र में उनका जन्म हुआ था। जन्म नाम खुशालचंद था। वि. सं. 1816 आषाढ वदि 2 को गच्छाधिपति आचार्य जिनलाभसूरि की निश्रा में संसार का त्याग कर संयम जीवन स्वीकार कर अमृतधर्म गणी के शिष्य बने। उनका अध्ययन उपाध्याय राजसोम व उपाध्याय रामविजय के सानिध्य में संपन्न हुआ। आपका अधिकांश विचरण अपने गुरु भगवंत श्री अमृतधर्म गणी की निश्रा में हुआ। गच्छनायक श्री जिनलाभसूरि, जिनचन्द्रसूरि के साथ भी आपका काफी विचरण हुआ। राजस्थान, गुजरात, बिहार, उत्तरप्रदेश, बंगाल, महाराष्ट्र आपके मुख्य विचरण क्षेत्र रहे।

उनकी विद्वत्ता के संदर्भ में पुरातत्वाचार्य पद्मश्री विभूषित जिनविजयजी तर्क संग्रह फक्किका नामक ग्रन्थ की प्रस्तावना में लिखते हैं–

''महोपाध्याय क्षमाकल्याण गणी राजस्थान के जैन विद्वानों में एक उत्तम कोटि के विद्वान् थे और अन्य प्रकार से अन्तिम प्रौढ पंडित थे। इनके बाद राजस्थान में ही नहीं अन्यत्र भी इस श्रेणि का कोई जैन विद्वान् नहीं हुआ। इनने जैन यतिधर्म में दीक्षित होने के बाद, आजन्म अखण्ड रूप से साहित्योपासना के अतिरिक्त तत्कालीन जैन समाज की धार्मिक प्रवृत्ति में भी इनने यथेष्ठ योगदान दिया जिसके फलस्वरूप केवल राजस्थान में ही नहीं परन्तु मध्यभारत, गुजरात, सौराष्ट्र, विदर्भ उत्तरप्रदेश, बिहार और बंगाल जैसे सुदूर प्रदेशों में भी जैन तीर्थों की संघयात्राऐं, देवप्रतिष्ठाऐं और उद्यापनादि विविध धर्म क्रियाऐं संपन्न हुई। इनके पांडित्य और चारित्र्य के गुणों से आकृष्ट होकर, जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर के तत्कालीन नरेश भी इन पर श्रद्धा एवं भक्ति रखते थे, ऐसा इनके जीवन चरित्र संबंधी उपलब्ध सामग्री से ज्ञात होता है।''

क्रियोद्धार –

उन्होंने अनुभव किया था कि चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि द्वारा किया गया शिथिलाचार का उन्मूलन शनैः शनैः काल प्रभाव से मंद हो रहा है एवं शिथिलाचार पुनः गच्छ में व्याप्त हो रहा है, अतः परम संवेग धारा में भीगकर उन्होंने इसे पूर्ण रूप से दूर करने का बीडा उठाया।

वि. 1838 माघ सुदि 5 को अपने गुरु भगवंत के साथ श्रमण जीवन हेतु विशिष्ट नियमावली तय कर क्रियोद्धार करके एक नई क्रान्ति का सूत्रपात किया। अपनी चादर का रंग बदला ताकि साधुत्व की पहचान सरलता से हो सके। अपनी प्रेरणा से बीकानेर में बने श्री सुगनजी के उपासरे में आपके द्वारा अंकित करवाया गया शिलालेख आपकी क्रियानिष्ठा को प्रकट करता है। इस उपाश्रय का निर्माण वि. सं. 1858 में हुआ। जबकि यह

लेख 1861 में संघ की साक्षी से लिखा गया। इस लेख की भाषा से उस काल की परिस्थितियों का भी पता चलता है, जिनके चलते यह लेख लिखाना पडा।

लेख इस प्रकार है–

श्री सिद्धचक्राय नमः। श्री पुण्डरीकादि गौतमस्वामीप्रमुख गणधरेभ्यो नमः। श्री वृहत्खरतरगच्छाधीश्वर भट्टारक श्री जिन–भक्तिसूरि शिष्य प्रीतिसागर गणि शिष्य वाचनाचार्य संविग्न श्रीमदमृतधर्मगणि शिष्यो–पाध्याय श्री क्षमाकल्याणगणिनामुपदेशात् श्री–संघेन पुण्यार्थं श्री बीकानेर नगरे इयं पोषधशाला कारिता सं. 1858।।

इस पोषधशाला मांहे शुद्ध समाचारी धारक संवेगी साधु साध्वी श्रावक श्राविका धर्मध्यान करै और कोई उजर करन पावे नहीं। सही।।रा। लिखितं उपाध्याय क्षमाकल्याण–गणिना सं0 1861 मिती मार्गशीर्ष शुदि 3 दिने श्री संघ समक्षम्।।

इस लेख के साथ एक और लेख भी उन्होंने इसी उपाश्रय में अंकित करवाया। वह लेख ज्ञान भंडार के विषय में है। उस समय ज्ञान भंडार की पोथियों को चुराने व क्रय विक्रय करने का वातावरण यतिवर्ग में चलता होगा, जिसके कारण महोपाध्यायजी ने यह मुद्रालेख अंकित करवाया।

लेख -

उपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी स्व निश्रा को पुस्तक भंडार स्थापन कीयो, उसकी विगत लिखे है।

ए ज्ञान भंडार को पुस्तक कोई चोर लेवे अथवा बेचे सो देव गुरु धर्म को विराधक होय, भवोभव महादुखी होय।।

उन्होंने अपनी निश्रा की सारी पोथियाँ इस ज्ञान भंडार में स्थापित की। उसकी सूची बनाई। ग्रन्थ इधर उधर न हो, इस हेतु यह लेख अंकित करवाया।

इस उपासरे में आपकी प्रतिमा भी बिराजित है।

साधना काल -

साधना के परिणाम स्वरूप उन्हें दैवी तत्वों का सामीप्य मिला। वासचूर्ण को अत्यधिक ऊर्जावान् बनाने के लिये उन्होंने साधना की। वासचूर्ण को विशिष्ट मंत्रों, मुद्राओं से अभिमंत्रित किया। वही वासचूर्ण आज पूरे खरतरगच्छ में क्रमिक परम्परा से डाला जाता है। दीक्षा, बडी दीक्षा, पदारोहण आदि अवसरों पर नामकरण करने के समय जो गच्छ–परम्परा उद्घोषित की जाती है। उसमें वासचूर्ण के साथ आपका नाम आदर के साथ बोला जाता है।

उनका व्यक्तित्व ध्यान और साधना से परिपूर्ण था। जैसलमेर के राज परिवार पर आपका जबरदस्त प्रभाव था। वे आपको अपना गुरु मानते थे। जोधपुर नरेश द्वारा जैसलमेर पर आक्रमण किये जाने पर आपने ही अपनी साधना के प्रभाव से युद्ध की विभीषिका में होने वाली हिंसा को रोका था।

एक विराट् नगाडे पर यंत्र का विधि विधान के साथ आलेखन करने के उपरान्त जब उसे बजाया गया, तो जोधपुर की सेना पलायन कर गई। जैसलमेर नरेश इस अद्भुत प्रत्यक्ष चमत्कार को देखकर प्रभावित हो उठा। उसने आजीवन अहिंसामय आचरण की शपथ ग्रहण कर ली। इस प्रकार के कई चमत्कार उनकी जीवन पोथी में अंकित है।

शत्रुंजय पर प्रकोप-विजय -

शत्रुंजय गिरिराज की बंद यात्रा को आपने ही अपनी साधना से प्रारंभ करवाई थी। अंगारशा पीर ने यात्रियों पर अंगारे फेंकने प्रारंभ कर दिये थे। परिणाम स्वरूप यात्रा स्थगित हो गई थी। वर्षों तक रही स्थगित यात्रा तब खुली जब महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. की निश्रा में श्री राजारामजी गिडिया एवं श्री तिलोकचंदजी लूणिया परिवार द्वारा आयोजित छह री पालित संघ के साथ सिद्धाचल पहुँचे।

उन्होंने अभिमंत्रित कीलिकाऐं पूरे यात्रा–पथ पर गाड दी। अंतिम कीलिका अंगारशा पीर की मजार के पास लग रही थी। फलस्वरूप अंगारशा पीर पीडित हो उठा। उसकी प्रार्थना स्वीकार कर तय किया कि जो भी संघ आयेगा, वह अंगारशा को चादर चढायेगा। चादर चढाने की परम्परा का सूत्रपात तब से हुआ जो आज तक निर्बाध चल रहा है। पालीताणा शहर में महाजन के वंडे के नाम से प्रसिद्ध विशाल भूखण्ड उस समय खरीद कर शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी को सौंपा गया था।

उस समय तीर्थाधिराज पर पंडों व पेढी के बीच चल रहे मतभेद को पूज्य श्री क्षमाकल्याणजी म. ने ही

निपटा कर लिखित समझौता कराया था।

अंतिम अवस्था में वे व्याधिग्रस्त थे। बीकानेर बिराज रहे थे। अस्वस्थता में भी प्रतिदिन पांच जिन मंदिरों के दर्शन करते थे। यह उनकी श्रद्धा भरी मानसिकता का परिणाम था। चातुर्मास पश्चात् वि. 1873 पौष वदि 14 को उनका स्वर्गवास हो गया। उनकी समाधिभूमि पर छतरी बनी, जिसमें उनके चरण स्थापित किये गये। इन चरणों की प्रतिष्ठा वि. सं. 1874 में आषाढ सुदि 6 उनके शिष्य धर्मानंद मुनि ने कराई थी। यह छतरी बीकानेर रेल दादावाडी में स्थित है।

कृतित्व -

वे आशु कवि, प्रौढ़ विद्वान् तथा समर्थ साहित्यकार थे। उनकी रचनाऐं उनके विद्वद् व्यक्तित्व को प्रकट करती हैं। उनके साहित्य को हम इन विभागों में बांट सकते हैं।

1. भक्ति परक साहित्य

2. विधि विधान परक साहित्य

3. सैद्धान्तिक साहित्य

4. इतिहास परक साहित्य

5. कथा साहित्य

1. भक्तिपरक साहित्य

विक्रम की 16वीं शताब्दी के बाद का समय भक्ति–योग का प्रेरक काल रहा है। इस कालखण्ड में हर धर्म व क्षेत्र में विशिष्ट कवियों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने प्रभु भक्ति के विविध आयामों पर काव्य–शक्ति को प्रकट करते हुए अपनी कलम को गति दी।

उसी श्रृंखला का एक अनूठा हस्ताक्षर है– श्री क्षमाकल्याणजी म.! वे मूलतः कविचेता साधु हैं। उन्होंने अपने आराध्य को लक्ष्य बनाकर सैंकडों की संख्या में भक्ति–परक पदों / स्तवनों / सज्झायों का सर्जन किया है।

उनके भक्तिपरक साहित्य को भाषा की दृष्टि से दो विभागों में बांटा जा सकता है।

संस्कृत भाषा की कृतियां व हिन्दी / मारवाडी / गुर्जर मिश्रित देशी भाषा की रचनाऐं!

संस्कृत भाषा में लिखी उनकी चैत्यवंदन चौवीशी पर संपूर्ण जैन समाज को नाज है। यह चौवीशी गच्छ व संप्रदाय की समस्त दीवारों को तोड कर सर्वत्र प्रचलित है। विविध छन्दों में लिखी इस चौवीशी की भाषा, शब्द–संयोजन, पद–लालित्य, उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग इतना अद्‌भुत है कि जब इनका सस्वर उच्चारण होता है तो एक अद्‌भुत संगीत का नजारा उपस्थित हो उठता है। प्रथम आदिनाथ परमात्मा के चैत्यवंदन की तीसरी गाथा में यद् शब्द के पुल्लिंग वाची सातों ही विभक्तियों का प्रयोग किया है। अर्थ–बोध की व्यवस्था सुचारू रूप से रखते हुए सातों विभक्तियों का प्रयोग कर उन्हें एक ही व्यक्तित्व में निर्यूढ करना, बहुत उच्च कला–साधना है।

इसी प्रकार द्वितीय अजितनाथ परमात्मा के चैत्यवंदन की तीसरी गाथा में नरपति, सुरपति, दिनपति, जिनपति शब्दों में अनुप्रास का जो माधुर्य प्रकट किया है, वह मन को रस की तरलता से आप्लावित कर देता है।

नवम सुविधिनाथ परमात्मा के चैत्यवंदन में अपने अन्तर की प्रार्थना परमात्मा के समक्ष अत्यन्त भक्ति रस के साथ प्रकट हुई है। बहुत सीधी भाषा में वे कहते हैं–

देवाधिदेव! तव दर्शनवल्लभोहं। शश्वद् भवामि भुवनेश! तथा विधेहि!

इन दो चरणों में अपनी एक मात्र अभिलाषा परमात्मा के चरणों में रखते हैं– हे भगवन्! हे देवाधिदेव! तुम्हारे दर्शन ही मुझे प्रिय है। पर मैं जानता हूँ कि तुम्हारे दर्शन वही कर सकता है जो शाश्वत हो जाये! अर्थात् अशाश्वत से दूर हो जाये! अशाश्वत शरीर से सदा सदा के लिये मुक्त हो जाये! हे प्रभो! मुझे आपके दर्शन चाहिये अतः मैं शाश्वत हो जाऊँ, ऐसा उपाय कीजिये।

संस्कृत भाषा पर उनकी गहरी पकड है। संस्कृत भाषा में लिखी उनकी रचनाओं में प्रौढ़ संस्कृत का नूर टपकता है। उनकी रचनाओं से यह सिद्ध होता है कि वे व्याकरण व न्याय के अप्रतिम विद्वान् साधु थे। संस्कृत भाषा में उनके द्वारा छोटी–बडी कितनी ही रचनाऐं की गई। अपने आराध्य देव वीतराग प्रभु के गुण–कीर्त्तन हेतु अपनी कलम को गति देते हुए स्तुतियां, चैत्यवंदन, तीर्थावली आदि विविध रचनाओं का सर्जन किया।

जैसलमेर के महारावल मूलराज के अनुनयवश रचित संस्कृत भाषामया विज्ञान चंद्रिका में प्रभु–भक्ति महिमा वर्णन के साथ आदर्श जीवन की बातें बतलाई है।

हिन्दी / मारवाडी मिश्रित देशी भाषा की उनकी रचनाऐं इतनी सरल, सहज, अलंकारिक व भाषायी चमत्कार से परिपूर्ण है कि वे आसानी से जन जन की जुबान पर छा जाती हैं। उनके गीत अटक से लेकर

कटक तक भक्तों के कण्ठ से प्रवाहित होकर भक्ति–रस का माधुर्य बिखेरते हैं।

अपनी रचनाओं में रहस्यवाद को सम्मिलित कर भक्तों को अर्थ–बोध के लिये बुद्धि दौडाने का अवसर भी उन्होंने कितने ही स्थानों पर दिया है।

एक पद की एक पंक्ति द्रष्टव्य है–

अयोग–योग–भेद नाथ!

देख है न तो समा।

–हे प्रभो! अयोग का योग भेद तो केवल आपमें ही नजर आया है। ऐसा भेद और कहीं नजर नहीं आया है।

यह पंक्ति अयोग के योग भेद के रहस्य को खोलने के लिये प्रेरित करती है। वे कहना चाहते हैं कि आप तो अयोगी हो! मन, वचन, काया रूप योग से रहित हो। पर जब योग था तब भी आपका जीवन तो अयोग प्रभावित था। क्योंकि आपका योग अर्थात् मन, वचन, काया का व्यापार, पूर्ण सहज था.. . आसक्ति रहित था, अयोग जैसा ही था। यह जो भेद है। ऐसा जो अयोग और योग आपके सिवाय और कहाँ नजर आता है।

चौबीस तीर्थंकरों के चैत्यवंदनों में आपने उनके जीवन–वृत्त को इस ढंग से समाविष्ट किया है कि तीर्थंकरों का वर्ण, जन्म–नगर, माता पिता नाम, आयु, लंछन, संयम–तप, संयम–ग्रहण–नगर, गणधर संख्या, साधु साध्वी, श्रावक श्राविका संख्या, निर्वाण स्थल, निर्वाण तप, निर्वाण कितनों के साथ हुआ आदि आदि इतिवृत्त मात्र छह पदों में अंकित कर दिया है। संपूर्ण चौवीश चैत्यवंदनों का अंतिम चरण ''करो संघ कल्याण'' रख कर अनुप्रास का विरल दृश्य उपस्थित किया है। इस पद में 'कल्याण' शब्द दो अर्थों में प्रकट हुआ है। कल्याण शब्द से संघ के मंगल की कामना भी है और अपने नाम की सूचना भी!

पदों की रचना स्वतंत्र नहीं होती। गद्य लेखन सरल होता है, क्योंकि उसमें शब्दों, वाक्यों आदि की कोई सीमा नहीं होती। अपने स्फुट भावों को आसानी से गद्य में लिखा जा सकता है।

पद्य रचना आसान नहीं होती। पद्य रचना की सीमा होती है। उसमें छन्द, मात्रा, तुक आदि बहुत सी मर्यादाओं का पालन करना होता है। मर्यादा की रक्षा करते हुए अपने भावों को अभिव्यक्त करना, कठिन साधना है।

श्री क्षमाकल्याणजी जन्मजात कवि प्रतीत होते हैं। तभी अपने जीवन काल में इतनी अनूठी और अद्‌भुत रचनाऐं वे कर सके। उनके द्वारा लिखे स्तवनों / स्तुतियों / सज्झायों / चौढालियों / गीतिकाओं आदि में भक्ति भरी भावुकता का प्रचुर दर्शन होता है।

सम्मेतशिखर के स्तवन की एक पंक्ति में अपनी धन्यता के अनुभव को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है–

धन धन दिन मुझ आज नो रे जोज्यो,
भेट्‌या श्री गिरिराय, हांजी कांई।
दोष सकल दूरे गया रे जोज्यो,
आनंद अंग न माय।।5।।

लौद्रवपुर पार्श्व प्रभु के स्तवन में परमात्मा को सुख समाधि का कर्त्ता निश्चित करते हैं–

प्रभु दर्शन थी दर्शन होय,
अतिनिर्मल तिम पावन होय।
दर्शनथी दुःख जावे दूर,
प्रगट हुवे सुख संपद पूर।।3।।
एहथी दूर टले कुविचार,
उपजे दिल आनंद अपार।
उत्तम ध्यान नो कारण एह,
तिम वलि सहज समाधि नो गेह।।4।।

इन पदों में परमात्मा के दर्शन को दर्शनशुद्धि का, सुख प्राप्ति का और उत्तम ध्यान समाधि का कारक कहा है।

शंखेश्वर पार्श्व प्रभु के स्तवन में अनुभव के दो भेदों की व्याख्या करते हैं।

अनुभव छे दुय भेदनो रे, शुद्ध अशुद्ध स्वरूप।
शुद्ध सदा मुझ दीजिये रे, न गमे अशुद्ध विरूप।।3।।
सुध अनुभव थी संपजे रे, निश्चय सुध व्यवहार।
निरविघने तेहथी मिले रे, शिव संपद सुखकार।।4।।

इस पद में शुद्ध और अशुद्ध दो प्रकार के अनुभवों की व्याख्या करते हुए वे परमात्मा से शुद्ध अनुभव की ही याचना करते हैं और स्पष्ट रूप से विनंती करते हैं कि अशुद्ध अनुभव मुझे नहीं चाहिये क्योंकि वह विरूप है। जबकि शुद्ध अनुभव 'स्वरूप' है। मुझे स्वरूप बोध करना है।

पार्श्व प्रभु के एक स्तवन में अपनी चेतना को संबोधित करते हुए वे लिखते हैं–

निर्विकार प्रभु बिंब निहारत, निज अनुभव वरना।
तज विभाव परिणति परसंगे,
शुद्ध स्वभाव धरना।।3।।

हे मेरी चेतना! तूं सोच! परमात्मा कितने निर्विकार है। उनकी प्रतिमा के दर्शन करते हुए अपने आत्म अनुभव का बोध करो। विभाव दशा में डूबी चेतना पर पदार्थ की संगति करती है। उसका त्याग कर निज शुद्ध स्वभाव को प्राप्त करो।

वे भक्त हैं तो कवि की रसिकता भी उनमें भरपूर है। अपने रसिक अनुभव को मर्यादा के साथ प्रकृति–वर्णन द्वारा अभिव्यक्त करते हैं। नेमिनाथ परमात्मा के एक स्तवन में प्रकृति की लीला प्रकट हुई है–

समय वसंत प्रगट भयो सुन्दर,
विकसित कुसुम अपार।
कोयल कलरव करत मधुर धुनि,
भमर करत झंकार।।

उनके इन गीतों में हृदय में कल कल उमडे भावों की सहज प्रस्तुति है। इन गीतों में इतिहास का समावेश भी उन्होंने बखूबी किया है। इन स्तवनों से उनकी विहार–यात्रा का वृत्तान्त भी सहज उपलब्ध हो जाता है।

2. विधि विधान परक साहित्य -

गच्छ–परम्परा में व्याप्त मतभेदों/संप्रदाय भेदों के कारण विधि विधानों में मतभेद चल रहा था। एक ही गच्छ में अलग अलग साधुजन श्रावकजन अलग अलग क्रिया करने लगे थे। सारे मतभेदों को दूर करने के लिये उन्होंने साधुओं व श्रावकों के लिये सुव्यवस्थित शास्त्र व पूर्व परम्परा के आधार पर विधि विधान के ग्रन्थों का निर्माण किया।

वर्तमान में हमारी साधु परम्परा में जो दैनिक विधि विधान गतिमान् है, वह आप द्वारा रचित साधु विधि प्रकाश के आधार पर निर्धारित है। साधु विधि प्रकाश में सुबह से शाम तक की समस्त विधि विधानों का स्पष्ट निर्देश अतिसरल भाषा में किया गया है। कहाँ एक खमासमण देना, कहाँ दो खमासमण देना, इसका स्पष्ट उल्लेख इस ग्रंथ में करके परम्परा को विकल्पों से मुक्ति प्रदान की है। इसी प्रकार श्रावक विधि प्रकाश में श्रावकों की विधियों की आम्नाय प्रस्तुत की है। प्रायश्चित्त विधि, साधु प्रायश्चित्त विधि, आलोयण विधि आदि आप द्वारा रचित विधि विधान के अनूठे ग्रन्थ हैं। जिनमें दोष लगने पर क्या प्रायश्चित साधु व श्रावक को लिया जाना चाहिये, इसका परम्परा व शास्त्र मान्य निर्देश है। प्रतिक्रमण हेतु विचार में प्रतिक्रमण की हर विधि के कारण को उपस्थित करके प्रतिक्रमण की पूर्ण उपयोगिता को स्वर दिया है। द्वादश व्रत टिप्पणिका में व्रतों की विशिष्टता, ग्रहण करने की विधि आदि का निर्देश किया है।

3. सैद्धान्तिक साहित्य -

आपकी रचनाओं में आपके सैद्धान्तिक ज्ञान व अनुभव की विशिष्टता प्रकट होती है। समय समय पर शिष्यों/श्रावकों/संघों द्वारा पूछे गये प्रश्नों को आपने प्रश्नोत्तर सार्ध शतक नामक ग्रन्थ द्वारा समाहित किया है। इन उत्तरों में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये उत्तर केवल बुद्धि द्वारा दिये गये नहीं है। अपितु इनमें शास्त्रों के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। यह ग्रन्थ अपने आप में अद्भुत है। 151 प्रश्नों का समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। जीव विचार पर लिखी गई वृत्ति तत्वज्ञान प्राप्ति की पहली पोथी है।

इस ग्रन्थ के अलावा और भी कई ग्रन्थों की रचनाऐं आपश्री ने की थी। विचार शतक बीजक, नग्न पाखंड मत स्वरूपाष्टक आदि रचनाएं अभी तक अप्रकाशित है। संग्रहणी सपर्याय, प्रश्नोत्तर शतक आदि कई ग्रन्थ अभी तक प्राप्त नहीं हो पाये हैं।

4. इतिहास परक साहित्य

खरतरगच्छ पट्टावली, जैन तीर्थावली द्वात्रिंशिका आदि रचनाओं में इतिहास को संकलित किया है। खरतरगच्छ पट्टावली अपने आप में ऐतिहासिक दस्तावेज है। परमात्मा महावीर से लेकर अपने समय तक के पट्टधर आचार्यों का वर्णन संवत्, मिति, स्थल आदि के साथ विस्तार से किया है। द्वात्रिंशिका तीर्थ वंदना है। तीर्थों के नामोल्लेख पूर्वक वंदना का भाव इस रचना में अभिव्यक्त हुआ है।

5. कथा साहित्य

श्रीपाल चरित्र, द्वादश पर्व कथा, समरादित्य केवली चरित्र, गौतमीय महाकाव्य वृत्ति, यशोधर चरित्र, भुवनभानु केवली चरित्र, अंबड चरित्र, श्रीपाल चरित्र वृत्ति आदि ग्रन्थों में कथा–तत्व प्रकट हुआ है। पर्युषण आदि पर्वों पर आज भी आप द्वारा लिखी द्वादश पर्व कथा का

वांचन होता है। न केवल खरतरगच्छ परम्परा में अपितु त्रिस्तुतिक परम्परा में भी पर्युषण महापर्व के अवसर पर आप द्वारा रचित अष्टाह्निका प्रवचन पढा जाता है। यह आपकी रचना की विशिष्टता को प्रकट करता है।

सूक्त रत्नावली आपकी मनोरम्य लालित्यपूर्ण औपदेशिक रचना है। उत्तम विचारों को सूक्तियों का रूप देकर उन्हें उपमा आदि विविध अलंकारों से सुशोभित कर जीवन कला को उपस्थित किया है।

इन ग्रन्थों के अलावा व्याकरण व न्याय विषयक ग्रन्थों की भी उन्होंने रचना की थी। तर्कसंग्रह के अध्ययन काल में उन्होंने उस पर फक्किका स्वरूप टीका की रचना कर न्याय विषय के पाठार्थियों के लिये विषय को सुलभ बनाने का पुरूषार्थ किया था। इसी प्रकार न्याय सिद्धान्त मुक्तावली पर भी फक्किका की रचना की थी। यह फक्किका अभी प्राप्त नहीं हुई है।

प्रतिष्ठाऐं -

पूज्यश्री ने अपने जीवन काल में अजीमगंज, महिमापुर, महाजन टोली, देवीकोट, देशणोक, अजमेर, बीकानेर, जोधपुर, मंडोवर आदि स्थानों पर प्रतिष्ठाऐं करवाई थी। पटना में सुदर्शन श्रेष्ठि के मंदिर के समीप ही गणिका रूपकोशा के आवास स्थान पर बनाई गई श्री स्थूलिभद्रजी की देहरी भी आपके उपदेश से ही वि. 1848 में बनी थी। उसकी प्रतिष्ठा भी आपके ही करकमलों से संपन्न हुई थी।

संकलन -

पूर्व में पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. ने जैसलमेर व जयपुर में रह कर वहाँ के ज्ञान भंडारों में प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों से पूज्य क्षमाकल्याणजी म.सा. की कृतियों के प्रतिलिपियों का कार्य करवाया था। वे प्रतिलिपियाँ हस्तलिखित ग्रन्थ के रूप में लोहावट के जिनहरिसागरसूरि ज्ञान भंडार में रही। अभी वे पालीताना के ज्ञान भंडार में है। इसी ज्ञान भंडार में पूज्य क्षमाकल्याणजी म. का प्राचीन हस्तचित्रित चित्र संरक्षित है।

बाद में पूज्य आचार्यश्री ने ही पूज्य महोपाध्यायजी की लगभग 60 गेय कृतियों का प्रकाशन करवाया था, जिसका लाभ श्री सुगनचंदजी बांठिया ने लिया था।

पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागर–सूरीश्वरजी म. सा. ने जोधपुर के पंडित नित्यानंद शास्त्रीजी को प्रेरणा देकर संस्कृत भाषा में आपश्री का जीवन चरित्र लिखवाया था। इस चरित्र के अनुसार आपश्री की दीक्षा संवत् 1812 में हुई थी, जबकि दीक्षा नंदी सूची के अनुसार आपकी दीक्षा 1816 में हुई थी।

परम विद्वान् क्रियोद्धारक महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी महाराज के स्वर्गवास को दो सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस पावन अवसर पर प्रिय शिष्य मुनि मेहुलप्रभ ने द्विशताब्दी अवसर को एक प्रेरणा के रूप में ग्रहण कर अल्प समय में उनकी 119 कृतियों को संग्रहित/संकलित/संपादित कर प्रकाशित कर अपनी परम्परा के उस उज्ज्वल नक्षत्र के प्रति सादर श्रद्धांजली अर्पण करने का अनुमोदनीय विनम्र पुरूषार्थ किया है।

पूज्यश्री की कृपापूर्ण अमी–वृष्टि शासन, गच्छ व समुदाय को निरन्तर प्राप्त होती रहेगी, ऐसी आशा है।

नवसारी में दीक्षा 21 अप्रेल को

नवसारी–बाडमेर निवासी कुमारी वैशाली गोलेच्छा की भागवती दीक्षा नवसारी नगर में 21 अप्रेल 2017 को वैशाख वदि 10 शुक्रवार को होगी। ब्रह्मसर तीर्थ में छहरी पालित संघ यात्रा के अवसर पर इस दीक्षा की घोषणा की गई। यह भागवती दीक्षा पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. की निश्रा में पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की सानिध्यता में संपन्न होगी।

मदुराई में प्रतिष्ठा 17 फरवरी को

श्री जैन तीर्थ संस्थान रामदेवरा, चेन्नई के अन्तर्गत तमिलनाडु के मदुराई नगर में कलश के आकार में निर्मित हो रहे श्री वासुपूज्य जिन मंदिर, श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी एवं श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव 17 फरवरी को संपन्न होने जा रहा है। इस मंदिर हेतु भूमि प्रदान श्री बगदावरमलजी इन्दरमलजी हरण भीनमाल वालों ने किया है। ट्रस्ट मंडल की विनंती पर पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने यह शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मंदिर में बिराजमान होने वाली समस्त प्रतिमाओं की अंजनशलाका पालीताना में पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. द्वारा संपन्न हुई थी। यह प्रतिष्ठा पूज्य मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी म. भुवनरत्नविजयजी म. की निश्रा में त्रिदिवसीय समारोह के साथ संपन्न होगी।

गुरुदेव की कहानियाँ

बदला, भले बुरे का

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

(गतांक से आगे)

मंगल ने बोलना चाहा पर शब्द उसके मुंह से नहीं फूटे। इतने में दो व्यक्ति अपने हाथों में दोनों बच्चों को उठाये भारी भीड़ सहित वहाँ पहुँच गये।

कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं रही। डॉक्टर ने बच्चों की नाड़ी देखी पर नाड़ी टूट चुकी थी। हो हल्ला सुनकर उर्मिला भी बाहर आ गई। अपने दोनों सीने के टुकड़ों की लाशें देखकर गश खाकर वहीं गिर गयी। डॉक्टर की आँखों में भी अंधेरा छाने लगा पर उसके अपने आपको संभाला और उर्मिला को सम्हालने लगा।

इधर उर्मिला होश में आयी, उधर अपराधी को भीड़ ने पकड़कर डॉक्अर के पास पहुँचा दिया। डॉक्टर तो गहरे विचार में ही डूबा हुआ था। उसे तो कुछ होश ही नहीं था। उसने पूछा-क्या कह रके हो तुम लोग?

लोगों ने पुनः कहा-अपराधी को पकड़ लिया है। डॉक्टर तो दूसरे ही चिन्तन में खोया था। वह सोच रहा था मैंने संपूर्ण दुनिया के साथ धोखा किया पर प्रकृति को मैं नहीं छल सका। मेरे अपराध की सजा मेरे बच्चों को मिल गयी। उसके दिमाग में ढाई साल पूर्व का दृश्य उभर गया। उसने भी दुर्घटना की थी। खून में लथपथ वह युवक भी तो किसी का चिराग था। वह सोच रहा था-मैंने उसको छला था पर क्या सजा मिली मुझको।

डॉक्टर ने मुर्दा आवाज में कहा-छोड़ दो उस व्यक्ति को। मेरी दुनिया तो वीरान हो ही गयी है किसी और की दुनिया को क्यों उजाडूं?

डॉक्टर की यह उदारता देखकर लोग आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने उस अपराधी को छोड़ दिया। डॉक्टर ने अपने दोनों मासूमों का अग्निदाह किया।

उसके बच्चों के शरीर तो राख में मिले ही पर उसके सारे अरमान, सारे सपने भी उस राख तले दब गये। अब तो मात्र वह एक जिन्दा लाश बन गया था।

घटना के दूसरे दिन ही वह अपने कक्ष में बैठा उदास निगाहों और शून्य मन से समय व्यतीत कर रहा था। हजारों के प्राण उसने बचाये थे पर अपने ही बच्चों को वह नहीं बचा पाया था। उसके नाम से ही मरीज ठीक हो जाते थे पर वह अपनी ही उजड़ती दुनिया को नहीं बचा पाया था। उसके फूल से नाजुक बच्चे असमय ही काल कवलित हो गये थे और वह दर्शन बनकर हाथ मलता ही रह गया था। कितना बदनसीब था वह कि अपने ही कन्धों पर अपने बच्चों की लाशों को ढोना पड़ा था और उन्हें अग्नि को समर्पित करना पड़ा था।

कल ही जिनकी निश्छल हँसी, मासूम ठहाकों से घर गूंज रहा था, वह घर आज चारों ओर से सिसक रहा था। उनके वे ठहाके पुनः लौटाने वाला कोई नहीं था।

विचारों में वह खोया हुआ था। सामने ही उनकी पत्नी भी भरी आंखों से बैठी हुई थी। इतने में नौकर मंगल आया और सूचना दी-जिसने पप्पू और मालती का एक्सीडेंट किया था, वह आपसे मिलना चाहता है।

डॉक्टर ने सिसकते हुए कहा-मुझे किसी से नहीं मिलता है। मैं किसी से मिलना नहीं चाहता। मेरा संसार ही स्वाहा हो गया है। अब दुनिया से मुझे कोई लेना देना नहीं है। कहते-कहते डॉक्टर फफक पड़ा। उर्मिला भी रो पड़ी।

वातावरण बोझिल हो उठा। इतने में तो वह युवक अन्दर ही आ गया। उसने डॉक्टर के पांव पकड़कर रोते हुए कहा-मेरे ही इन दुष्ट हाथों ने आपके बच्चों को मृत्यु का

ग्रास बनाया है। ढाई वर्ष के बाद आज पहली ही बार मैंने कार चलायी और कार का संतुलन बिगड़ गया।

डॉक्टर ने आश्चर्य से पूछा-ढाई पर्ष बाद क्यों?

युवक ने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाते हुए कहा-हाँ! ढाई वर्ष पूर्व मेरा एक्सीडेंट हो गया था। वह तो भाग गया पर एक पीछे से आ रहे कार वाले ने मुझे देखा और घायलावस्था में ही मुझे अस्पताल पहुँचाया। मेरे मस्तिष्क पर जबर्दस्त चोट आने से मेरे ज्ञानतन्तु मूर्च्छित हो गये थे अत: लगातार मैं ढाई वर्ष तक वहाँ भर्ती रहा। आज ही मैंने कार चलायी और आपके बच्चे कुचल गये।

डॉक्टर ने कन्धे पकड़कर उसको उठाया और कहा-क्षमा मांगने का अधिकारी तो मैं हूँ। मैंने ही तुम्हें घायल किया था। मैंने ही तुम्हें घायल करने के बावजूद तुमको न उठाकर मानवता को सरेआम नीलाम किया था। बंधु! मुझे माफ कर दो। जो जैसा करता है, उसका फल उसे अवश्य मिल जाता है। तुम्हारा कोई कोष नहीं। दोष सारा मेरा ही है। तुम जाओ और हो सके तो कभी कभार आकर हमारी सूनी दुनिया को क्षणिक प्रसन्नता और खुशियाँ दे जाया करना।

बाहर संगीत गूंज रहा था-''बदला भले बुरे का, यहाँ का यहाँ ही मिलता।''

बाड़मेर से संघ ब्रह्मसर पहुँचा

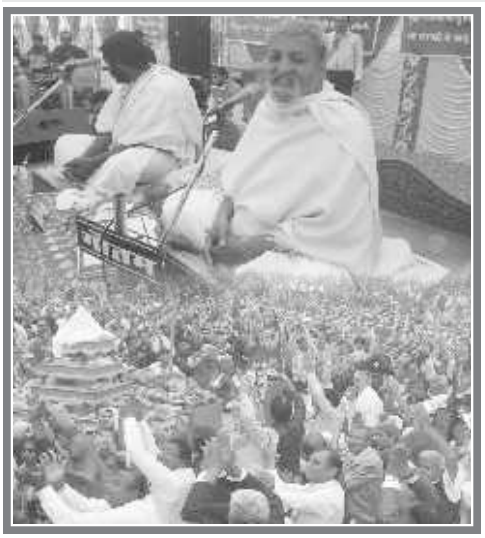

कुशल दर्शन मित्र मण्डल ब्रह्मसर छ:री पालित पैदल यात्रा सघ समिति बाडमेर के तत्वावधान में प. पू. वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती प.पू. उपाध्याय प्रवर मनोज्ञसागर जी म.सा. व प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा 21 साधु-साध्वी की पावन निश्रा में भव्य पैदल यात्रा संघ शनिवार को प्रात: 9.15 बजे बाड़मेर से ब्रह्मसर तीर्थ के लिए गाजे बाजे के साथ रवाना हुआ। छ:री पालित यात्रा संघ समिति के संयोजक पारसमल धारीवाल ने बताया कि पैदल यात्रा संघ जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन से प.पू. उपाध्याय प्रवर मनोज्ञ सागर जी म.सा. द्वारा मांगलिक श्रवण कराकर चालो सा रे चालो सा ब्रह्मसर चालो सा, इस गीत संगीत के साथ रवाना हुआ।

मुख्य अतिथि बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन, नाकोड़ा ट्रस्ट के अध्यक्ष अमृतलाल जैन.जैन श्री संघ के अध्यक्ष सम्पतराज बोथरा एवं खरतरगच्छ चार्तुमास कमेटी के अध्यक्ष रतनलाल संखलेचा, पैदल यात्रा संघ के संयोजक पारसमल धारीवाल, संहसंयोजक लुणकरण गोलेच्छा, मदनलाल मालू, अशोक धारीवाल ने हरी झण्डी दिखाकर संघ को रवाना किया।

पैदल यात्रा संघ आराधना भवन से प्रतापजी की प्रोल, जैन न्याति नोहरा, पीपली चौक, स्टेशन रोड़ होता हुआ भगवान महावीर टाऊन पहुंचा। जहां पर आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के मंगल सन्देश का पठन किया गया। पू. उपाध्याय प्रवर एवं प्रवर्तिनी शशिप्रभा श्री जी म.सा. ने अपने मंगल प्रवचन में बाड़मेर संघ की आत्मीयता की अनुमोदना की। मांगलिक श्रवण करवाकर प्रथम पड़ाव जालिपा की ओर प्रस्थान किया।

पैदल यात्रा संघ भादरेश, विशाला, सुरा, दुदाबेरी, बालेबा, हरसाणी, जैसलमेर, लौद्रवपुर होता हुआ 1 जनवरी को ब्रह्मसर तीर्थ पहुँचा एवं दिनांक 2 जनवरी को माला विधान संपन्न हुआ।

41
श्रमण चिंतन

देहं पातयामि वा कार्यं साधयामि

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

श्रमण जीवन का चिन्तन-मनन-मंथन-लेखन करता हुआ मैं पूर्णता के अत्यन्त निकट पहुँच रहा हूँ।

अहा...! कितना अद्‌भुत आनंद!

कैसी अलौकिक विचार प्रणाली!

कैसा सुन्दर पापमुक्त जीवन!

संसारी, भोगी लोग हजार उठापठक... लाखों पाप... करोड़ों अशुभ अध्यवसाय करके भी जिस सुख, शांति और समाधि का अनुभव नहीं कर पाते, साधु उस सुख का अनुभव पल भर की गहरी साधुता में प्राप्त कर लेते हैं।

यद्यपि श्रमण जीवन की चर्या, साधना और उपासना कोई सरल बात नहीं है तथापि जिसका चित्त संवेग से भीग चुका है, निर्वेद और वैराग्य जिसकी दो आँखें हैं, ज्ञान और ध्यान जिसकी दो भुजाएँ हैं, परमात्मा के प्रवचन पर श्रद्धा जिसके हृदय की धड़कन बन चुकी है, उसके लिए श्रमण चर्या का हर-एक उपसर्ग अमृत तुल्य बन जाता है।

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का सतरहवाँ श्लोक यहाँ प्रस्तुत है ताकि हम जान सके कि साधु का संकल्प कैसा अडिग?श्रद्धा कितनी अनुपम?साधना का समर्पण कितना मस्त, मजेदार और सुगंधित!

जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ,
चइज्ज देहं न हु धम्मसासणं!
तं तारिसं नो पइलंति इंदिया,
उविंतवाया व सुदंसणं गिरिं!!॥७॥

जिस संयमी ने संसार की विषाक्तता का अनुभव कर लिया है, भोग-उपभोगों से जनित सुख की नश्वरता का बोध पा लिया है, सम्बन्धों से उठती स्वार्थ की दुर्गंध ने जिसके मन को परमार्थ की खुश्बू के लिए अत्यन्त उत्सुक बना दिया है, वह अनुत्तर संयमी... त्रिगुप्ति में रमण करने वाला श्रमण शरीर का त्याग कर देता है पर संयम धर्म का परित्याग नहीं करता!

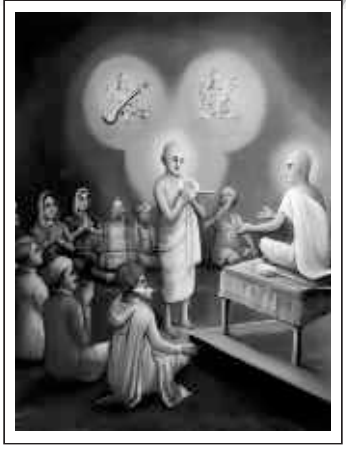

'कार्यं साधयामि वा देहं पातयामि' यह संकल्प सूत्र उसकी रग-रग में रक्त की भाँति संचरण करता है।

उपसर्ग भले ही कितने ही आए पर मुझे संसार में जाना स्वीकार्य नहीं। फिर मेरे मन में जिन वासनाओं की झंखना ने तूफान मचाया है... मेरे मन को अपवित्र और चलित करने का कार्य किया है, वे वासनाएँ भी सदा की कहाँ?उनसे जनित सुख भी कितना भ्रमपूर्ण?

संसारी जिस भोग के प्रथम क्षण में सुख की अनुभूति करते हैं, वह सुख अगले क्षणों में वैसे ही तिरोहित हो जाता है जैसे सूर्य के तपते ही इन्द्रधनुष! इन्द्रधनुष तो फिर भी यथार्थ का हिस्सा है पर भोगों से मिलने वाला सुख नितान्त भ्रमजाल! कोरा...फीका...झूठा अहसास!

इस संसार में चार प्रकार के श्रमण हैं- (1) कुछ ऐसे मुनीश्वर होते हैं जो देह को छोड़ देते हैं पर संयम को नहीं छोड़ते। इस कड़ी में कितने कितने मुनियों का चारित्र... उनकी देह के प्रति अनासक्ति मेरी आँखों के सामने छा रही है। मेरा मस्तक श्रद्धा से लुलि लुलि विनत हो रहा है... चित्त अनुमोदना की वर्षा से भीगा जा रहा है।

मस्तक पर जलते अंगारें और समता के साधक मुनि

गजसुकुमाल! कहाँ उनकी सुकुमार काया और कहाँ कठोर घोर परीषह!

चमड़े की पट्टी से फटा जा रहा माथा-तड़-तड़ की आवाज करती हुई टूट रही हड्डियाँ और क्षमा के सागर में गोते लगा रहे महामुनि **मेतारज**!

काचर के छिलके की तरह उतर रही चमड़ी और साधना सम्पूर्ण स्थिर मुनिवर्य **खंधक**!

घाणी में तिल की तरह पील रहा पापी पालक और क्षमावंत **पाँच सौ मुनियों** की अतिधीरता-महावीरता !

सोलह रोगों से छलनी छलनी हो रही कायिक संपदा और संयम संपदा के संरक्षण में चतुरता का प्रयोग कर रहे मुनि **सनत्कुमार**!

भाले में पिरोये हुए कृश शरीरी **अर्णिकापुत्राचार्य** और अप्कायिक जीवों के प्रति बहता करूणा का अनुपम झरणा!

ऐसे मुनीन्द्रों से ही यह धरती रत्नगर्भा कहलाती है। उन मुनियों को संसार, इन्द्रिय और पदार्थ से उत्पन्न सुख उसी प्रकार चलित नहीं कर पाते, जिस प्रकार महावात मेरूपर्वत को। धन्यवाद है उनकी धीरता, वीरता और गंभीरता को। साधुवाद है उनकी साधना, साधुता और संयम-निष्ठा को।

कुछ साधु कण्डरीक मुनि की भाँति संयम छोड देते हैं पर देह का ममत्व नहीं छोडते।

कुछ श्रमण गणधर गौतम गुरू की भाँति इसी देह से संयम की साधना कर देहातीत पद पा लेते हैं

निश्चित ही देह में विदेही बनकर जीना मुक्ति की युक्ति है, इसी कारण साधु को सैंकडों वंदनाएँ।

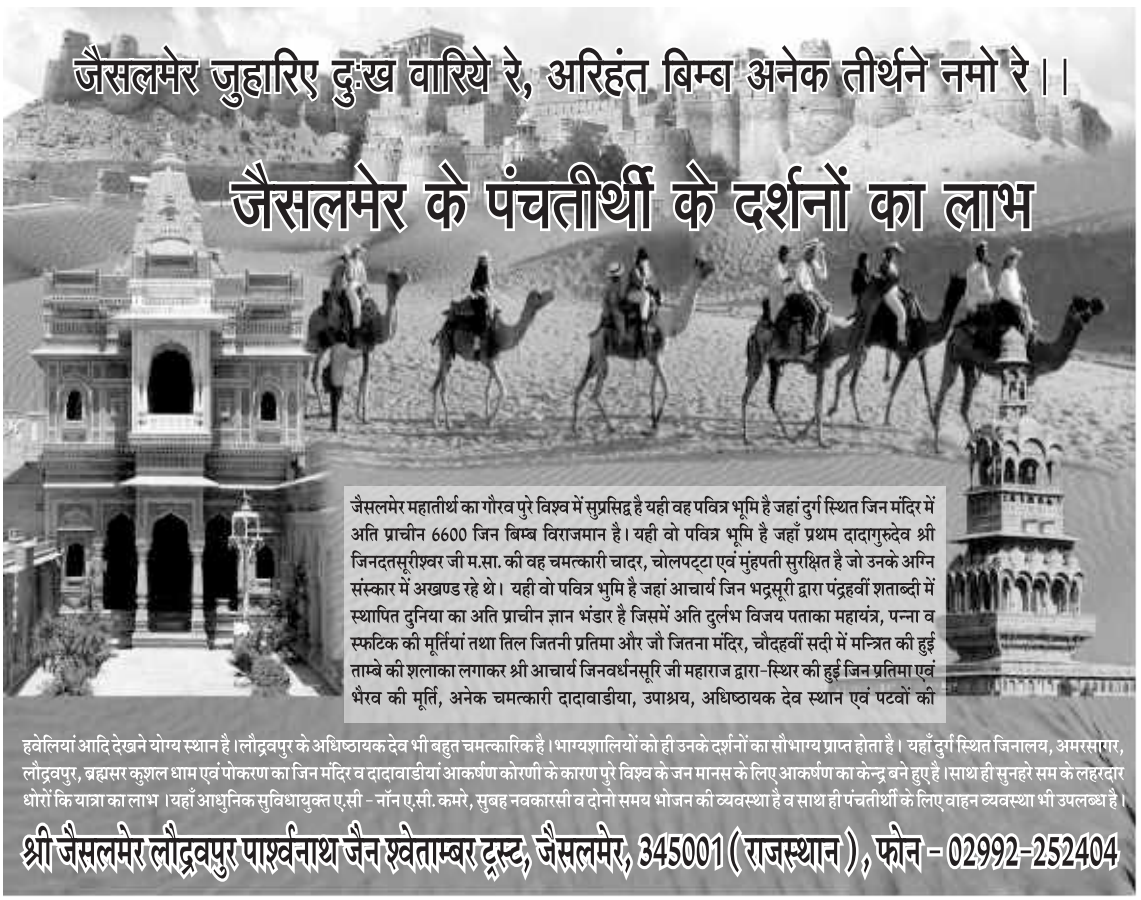

दस महाश्रावकों की प्रेरक-जीवन-गाथा

कुण्डकौलिक श्रावक

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे)

एक बार ऐसा हुआ कि कार्यवशात् वह अशोक-वाटिका के एक खण्ड में प्रविष्ट हुआ। अचानक उसकी मन:स्थिति एवं अध्यवसाय-विशुद्धि उत्तरोत्तर इतनी आगे बढ़ी कि वही एक शिला पर पद्मासन में ध्यानस्थ बन गये। उससे पहले मुद्रिका नीचे रखी, उत्तरीय-वस्त्र का परित्याग करके आत्म-ध्यान की गुण श्रेणी चढ़ने लगे।

कुछ पलों में ही कोई देव आया, कुण्डकौलिक की हस्त-मुद्रिका एवं उत्तरीय वस्त्र ग्रहण करके आकाश में स्थिर होता हुआ बोला- कुण्डकौलिक! शरीर को कष्ट देना धर्म नहीं है। जो सुखपूर्वक हो, काया का जिसमें दमन न हो, ऐसा धर्म करना चाहिये अत: तूं मंखलीपुत्र गोशालक के धर्म में दीक्षित हो जा।

उसने नियतिवाद पर आधारित जो सरल-सहज धर्म का मार्ग बताया है, उसे छोड़कर क्यों काया को कष्ट दे रहा है?

प्रभु पर आक्षेप! यह आक्षेप केवल महावीर पर नहीं, अपितु अनन्त सर्वज्ञों के सत्य-विज्ञान पर था। कुण्डकौलिक से यह सहन नहीं हुआ।

यदि कोई मुझ पर अंगुली उठाता तब तो कोई बात नहीं होती पर सर्वज्ञ प्ररूपित सम्यग्-सिद्धान्त को झूठा बता रहा है, तब मेरा मौन रहना श्रेयस्कर कैसे हो सकता है?

देव कह रहा था- श्रमण महावीर द्वारा उपदिष्ट धर्म युक्ति संगत नहीं है क्योंकि उन्होंने, उत्थान, बल, वीर्य और पराक्रम पर बल दिया गया है जबकि सब कुछ नियति के आधार पर चलता है। गोशालक का नियतिवाद युक्तियुक्त है। उसकी धर्म-व्याख्या में बल, वीर्य, कर्म, पराक्रम, पुरूषाकार, उत्थान आदि कुछ भी नहीं है। जो भी हुआ है, हो रहा है और आगे होगा, वह नियति का परिणाम है। अत: समझ के द्वार खोल। महावीर की धर्म प्रज्ञप्ति को छोड़कर गोशालक की शरण में आ, वही तेरा कल्याण होगा।

प्रतिवाद करते हुए कुण्डकौलिक ने कहा- तुम्हें जो यह देवलोक की ऋद्धि-समृद्धि प्राप्त हुई है, जिस दिव्य ऐश्वर्य का तूं उपभोक्ता बना है, वह क्या बिना पुरूषार्थ के प्राप्त हुई है?

देव बोला-हाँ! यह पुरूषार्थ की नहीं, नियति की परिणति है।

तब कुण्डकौलिक ने कहा- यदि यह समृद्धि नियति के बल पर प्राप्त हुई है, तो जितने भी पुरूषार्थहीन हैं, वे सभी तुम्हारे मतानुसार देव होने चाहिये पर ऐसा क्यों नहीं हुआ?

देव के पास इस तर्क का कोई उत्तर न था।

कुण्डकौलिक की तत्त्व दृढ़ता देख उसका स्तुति-गान कर देव विदा हो गया।

दूसरे दिन जब कुण्डकौलिक श्रावक-पर्षदा में पहुँचा, तब उस महाश्रावक की दृढ़ता एवं तत्त्वचर्चा की प्रशंसा करते हुए प्रभु वीर ने श्रमण-वर्ग को केन्द्र में रखते हुए कहा-मुनिवरों! एक अपेक्षा से कुण्डकौलिक तुमसे उत्तम और आदर्श स्तंभ है।

गत दिवस जब अशोक उद्यान में यह ध्यानरत था, तब देव ने इसे धर्मच्युत करने के लिये गोशालक मत की प्ररूपणा की। इसने गोशालक के नियतिवाद के मत को नितान्त एकान्तवाद होने से अधर्म बताया। तर्कपूर्ण सटीक प्रत्युत्तर सुनकर वह निरूत्तर प्रत्यावर्तित हो गया, ऐसी दृढ धर्म की श्रद्धा एवं तत्त्वबोध बहुत ही कम जीवों में दृष्टिगत होता है।

तुम साधुओं की धर्मदृढ़ता की परीक्षा कदम-कदम पर होती है, अत: सजगतापूर्वक उसकी सुरक्षा करके वाद-दक्ष बनना चाहिये। सम्यग्मत की प्ररूपणा से स्वयं पर एवं संसार पर उपकार होता है।

देव-परीक्षा की घटना के बाद तो कुण्डकौलिक की ख्याति इतनी बढ़ी कि वे प्रभु वीर के मुख्य श्रावकों में गिने जाने लगे।

चौदह वर्ष पर्यन्त श्रावक जीवन जीने के बाद प्रतिमा की महासाधना निर्विघ्न पूर्ण की। अन्त में मासिक अनशनपूर्वक पण्डित मरण प्राप्त करके सौधर्म देवलोक में देव बने।

देवायुष्य की पूर्णता के उपरान्त वे महाविदेह क्षेत्र में महाव्रतों की महाराधना करके देहातीत निजानन्द में अनन्तकाल तक वास करेंगे।

खरतरगच्छाधिपति
पूज्य आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.

महत्तरा पद विभूषिता खान्देशशिरोमणि

प. पू. श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 75 वे जन्मदिन एवं 65 वे दीक्षादिन

के अवसर पर तहेदिल से बधाईयां...

ता. 10.12.2016 मौन ग्यारस

शांत मूर्ति
श्री पवित्रश्रीजी म.सा.

चेतना की चमकती चांदनी का अभिनंदन,

साधना की दकमती रोशनी का अभिनंदन।

अपनी अमृत वाणी से हम सब को सदा सुमार्ग दिखाने वाले।

गुरुवर्या के जन्म दिवस पर हम सबका शत-शत वंदन।।

वंदनकर्त्ता

श्री धरमचंद-सौ. कंचनदेवी

श्री परेशकुमार-सौ. स्तुति

हृदय, मीत भंसाली

(रांची - लोहावट)

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

पूज्यश्री का भीगापन मन को छू गया। हमारी आंखें भी आंसुओं से भीग गई। पूज्यश्री का अपने गुरुदेव के प्रति अगाध श्रद्धा भाव सहज प्रकट हो रहा था। रूग्ण अवस्था में अपने प्रिय उपकारी गुरुदेव को छोड़ना, बहुत पीड़ाकारी निर्णय था। पर निर्णय करने का अधिकार उन्हें कहाँ था! निर्णय तो गुरु महाराज को करना था। गुरुदेवश्री को तो आदेश का केवल पालन करना था।

गुरुदेवश्री अपने गुरु महाराज के संस्मरणों में डूब गये।

वे फरमा रहे थे- मेरी दीक्षा हुई ही थी, तब प्रेम से गुरु महाराज मुझे कान्तु कहकर बुलाते! कभी किसी कारण जब आक्रोश प्रकट करना होता तो उसमें भी अपनेपन की सुगन्ध के साथ वे कान्तुड कहकर पुकारते। उनके श्रीमुख से कान्तु शब्द सुनना कितना अच्छा लगता! ओह! ऐसे प्रिय गुरुदेव को उन्हीं के आदेश की पालना के लिये छोड कर विहार करना पडा। श्री फलोधी पार्श्वनाथ परमात्मा के दर्शन करते समय प्रार्थना निकल पडी- हे परमात्मन्! मेरे गुरु महाराज को स्वस्थता देना ताकि हम बम्बई जाकर पुनः आये तो उनके दर्शन हो... सानिध्य मिले... ।

पूज्य गुरुदेव श्री ने मुंबई चातुर्मास हेतु तीन मुनियों को आदेश दिया था। बडे गुरु बंधु गणीवर श्री हेमेन्द्रसागरजी म., मैं व लघु गुरु बंधु मुनि दर्शनसागरजी म.! तीनों गुरुभाई! परस्पर अपार आत्मीयता!

पूज्यश्री से मांगलिक श्रवण कर भरे हृदय से हमने मुंबई की ओर विहार किया। पूज्य आचार्यश्री की सेवा में उनके ज्येष्ठ शिष्य मेरे वडील गुरू बंधु उपाध्याय श्री कवीन्द्रसागरजी म.सा., तीर्थसागरजी म. आदि थे।

पूज्यश्री का मेडता रोड से फरवरी 1949 में

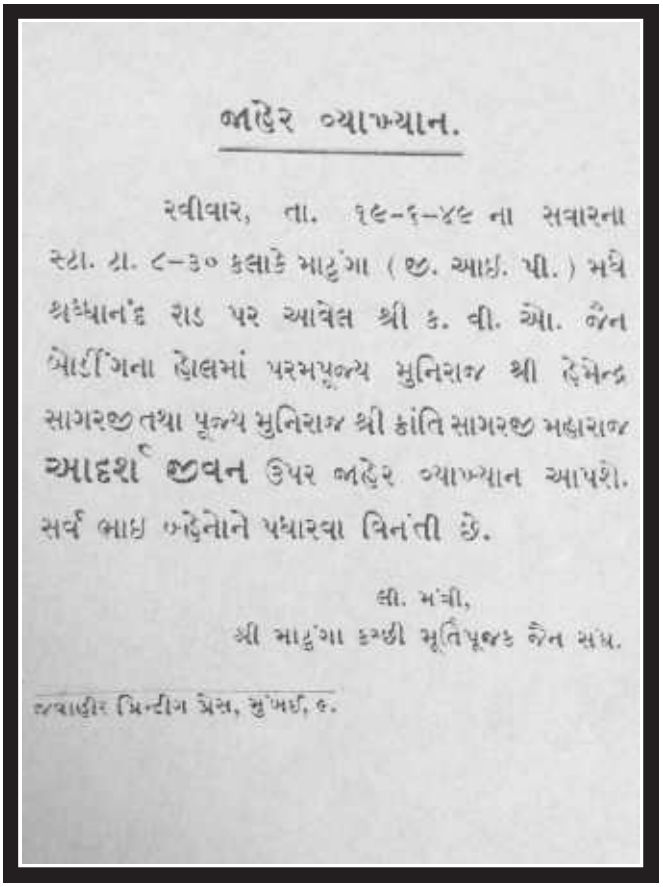

જાહેર વ્યાખ્યાન.

રવીવાર, તા. ૧૯-૬-૪૯ ના સવારના સ્ટા. ટા. ૮-૩૦ કલાકે માટુંગા (જી. આઇ. પી.) મધે શ્રધ્ધાનંદ રોડ પર આવેલ શ્રી કે. વી. ઓ. જૈન બોર્ડીંગના હોલમાં પરમપૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી હેમેન્દ્ર સાગરજી તથા પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી કાંતિ સાગરજી મહારાજ **આદર્શ જીવન** ઉપર જાહેર વ્યાખ્યાન આપશે. સર્વ ભાઇ બહેનોને પધારવા વિનંતી છે.

લી. મંત્રી,
શ્રી માટુંગા કચ્છી મૂર્તિપૂજક જૈન સંઘ.

જવાહીર પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ, મુંબઇ, ૬.

विहार हुआ था। जून में मुंबई पहुँच गये थे। मुंबई में उस समय जैन मुनियों का कम ही आना जाना होता था। विहार पथ में आने वाले शहरों/गांवों में संपन्न हुए सार्वजनिक प्रवचनों की प्रतिध्वनि मुंबई पहुँच गई थी। परिणाम स्वरूप मुंबई में हर उपनगर वालों की प्रवचन हेतु विनंतियाँ प्रारंभ हो गई। गच्छवाद का वातावरण नहीं था।

यही कारण था कि मुंबई का उस समय का एक भी उपाश्रय ऐसा नहीं रहा होगा जहाँ पूज्यश्री के प्रवचनों का आयोजन न हुआ हो।

तीनों मुनियों की संध्याकालीन बैठक में यह निश्चित किया गया कि चातुर्मास से पूर्व उपनगरों का भ्रमण कर लेना चाहिये। इससे स्थान स्थान पर प्रवचन होगा... परिचय बढेगा... परिणाम स्वरूप चातुर्मासिक आराधना में वृद्धि होगी।

पूज्यश्री का एक नियम था। चातुर्मास से पूर्व चातुर्मास-स्थल के आसपास किसी तीर्थ स्थान अथवा किसी एकान्त स्थान में संपूर्ण मौन के साथ अट्ठम करते हुए साधना जाप करना।

इस नियम का पालन उन्होंने अन्तिम समय तक किया। उस दौरान लोगों से वार्तालाप नहीं होता। तप तो पूज्यश्री से अधिक नहीं हो पाता था। पर गौचरी का नियमन अवश्य करते थे। निद्रा भी उन दिनों अति अल्प समय के लिये लेते थे।

मुंबई चातुर्मास से पूर्व जाप का यह विधान खरतरगच्छ के गौरव शेठ मोतीशा द्वारा निर्मित मुनिसुव्रत स्वामी परमात्मा के तीर्थ अगाशी की पावन धरा पर किया था।

चातुर्मास से पूर्व उनके प्रवचन आयोजित करने हेतु विविध स्थानों की आग्रह पूर्ण विनंतियाँ होने लगी। चातुर्मास का प्रारंभ 9 जुलाई 1949 से हो रहा था।

पूज्यश्री का पहला प्रवचन माटुंगा में आयोजित हुआ। यह आयोजन श्रद्धानंद रोड पर स्थित कच्छी वीशा ओसवाल जैन बोर्डिंग हॉल में संपन्न हुआ। ता. 19 जून 49 को आयोजित इस प्रवचन का आयोजन माटुंगा कच्छी मूर्तिपूजक जैन संघ द्वारा किया गया था। 'आदर्श जीवन' विषय पर आयोजित इस व्याख्यान का प्रचार-पत्रक छपवाकर विशेष रूप से प्रचार प्रसार किया गया था।

इस प्रवचन को सुनने के लिये कच्छी समाज बडी संख्या में उपस्थित था।

क्रमशः

गौत्र - इतिहास

भंसाली गोत्र की शाखाऐं

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

चील मेहता, भूरा, बद्धाणी, चंडालिया, कच्छवाहे, सोलंकी, मेहता, चौधरी आदि भंसाली गोत्र की शाखाऐं हैं।

भंसाली वंश परम्परा में भूराजी नामक श्रावक हुए। उनसे भूरा शाखा निकली। पूगल गांव में बसने के कारण वहाँ के भंसाली पुगलिया कहलाते हैं। थीहरूशाह को अकबर ने राय पद प्रदान किया था। उनकी वंश परम्परा राय भणसाली कहलाई। इन्हीं राय भणसाली से चंडालिया व बद्धाणी शाखा निकली।

थीहरूशाह के वंशजों को वहाँ के नरेश ने कच्छवाहे की उपाधि दी थी। कई भंसाली परिवार कच्छवाहे भंसाली का प्रयोग करते हैं।

भंसाली परिवार के ही पुण्यपाल को चित्तौड के राणा हमीरसिंहजी ने मुहता बिरूद दिया था। इसलिये इनके परिवार मुहता/मेहता भंसाली कहलाये।

चौधरी का काम करने से जोधपुर, जालोर आदि क्षेत्रों के भंसाली परिवार चौधरी अटक लगाते हैं।

चील मेहता भी भंसाली है। उनका कथन है कि इस गोत्र की स्थापना खरतरगच्छाचार्य श्री जिनवल्लभसूरिजी महाराज ने की है। आभूगढ में राजा सोलंकी आभडदे राज करता था। उसने सात विवाह किये थे। पर किसी से उत्पन्न संतान जीवित नहीं रहती थी। उसने बहुतेरे उपाय किये। कई मंत्र तंत्र करवाये। देवी देवता मनाये पर उसकी समस्या का समाधान नहीं हुआ।

विहार करते हुए आचार्य जिनवल्लभसूरि आभूगढ पधारे। राजा ने उनके दर्शन कर अपनी समस्या निवेदित की। आचार्य भगवंत ने फरमाया- यदि तुम शिकार आदि का सर्वथा त्याग करते हो... जैन धर्म को अंगीकार करते हो... तो तुम्हारी समस्या का समाधान हो जायेगा।

राजा और उनके पूरे परिवार ने गुरु भगवंत के आदेश को शिरोधार्य करते हुए जैनत्व स्वीकार किया। आचार्य भगवंत ने उनके सिर पर वासचूर्ण डाल कर श्रावकत्व प्रदान किया। राजा के सातों रानियों से सात पुत्र हुए। सभी जीवित रहे। भंडसाल में वासक्षेप डालने के कारण भणसाली गोत्र स्थापित हुआ।

दादा जिनदत्तसूरि के जीवन-वृत्त में भंसाली गोत्र से संबंधित एक घटना का उल्लेख प्राप्त होता है। दादा जिनदत्तसूरि विहार करते हुए अणहिलपुर पट्टन पधारे थे। अंबड नामक एक श्रावक जो खरतरगच्छ का द्वेषी था, उसने आचार्य भगवंत के शिष्य को जहर मिश्रित मिश्री का जल वहोराया। गुरु महाराज ने उस विषमिश्रित जल को गहण कर लिया। ग्रहण करते ही वे यह जान गये कि यह जल तो जहर से भरा हुआ था।

उस समय भणसाली गोत्र का एक श्रावक आभू वहीं उपाश्रय में था। ज्योंहि उसे इस घटना का पता चला तो वह श्रावक भूखा प्यासा, सारे काम छोड कर एक ऊँट पर चढकर समीपस्थ शहर में जहाँ एक व्यक्ति के पास विषापहारिणी मुद्रिका थी, पहुँचा। और मुद्रिका लेकर दौडता आया उपाश्रय आया। उस मुद्रिका को प्रासुक पानी में डूबोकर वह जल गुरुदेवश्री को दिया गया... जहर दूर हो गया।

पर कुछ ही समय में यह बात पूरे शहर में फैल गई।

राजा को ज्योंहि इस घटना का पता चला तो उसने अम्बड को राजदरबार में बुलाया। राजा ने उसे चौरंगा करने का आदेश दिया। गुरुदेव ने करूणा करके अपने शिष्यों को राजा के पास भेजा और आज्ञा रद्द करवाई।

पूरे शहर में अम्बड हत्यारे के रूप में प्रसिद्ध हो गया। कुछ समय बाद वह काल धर्म को प्राप्त हो गया। मर कर व्यन्तर बना। गुरुदेव और भंसाली परिवार पर लगातार उपद्रव करने लगा। गुरुदेव की रक्षा के लिये भंसाली परिवार अपना बलिदान देने के लिये सहर्ष तत्पर हो उठा।

गुरुदेव ने अपने साधना-बल से उस व्यन्तर को

स्तंभित कर दिया। भंसाली परिवार पर गुरुदेव ने रजोहरण फेरा। भंसाली परिवार की सुरक्षा हुई। भंसाली परिवार की इस गुरु-भक्ति पर लोगों ने कहा- तुम खरे भक्त हो! वे खर भंसाली कहलाने लगे।

इस वंश में जालसी मेहता नामक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। उन्होंने जालोर के शासक मालदेव का पूर्ण विश्वास प्राप्त किया था। अलाउद्दीन ने चित्तौड पर कब्जा कर लिया। महाराणा हमीर को पुनः चित्तौड प्राप्त करने में जालसी मेहता का बहुत योगदान प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप राणा हमीर ने जालसी मेहता को बडी जागीर प्रदान की। जालसी मेहता भंसाली गोत्र के थे।

इन्हीं की वंश परम्परा में 17वीं शताब्दी में चीलजी हुए। वे बडे राजमान्य व्यक्तित्व थे। उनके वंशज चील मेहता लगाने लगे।

जयपुर में पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक मनाया गया

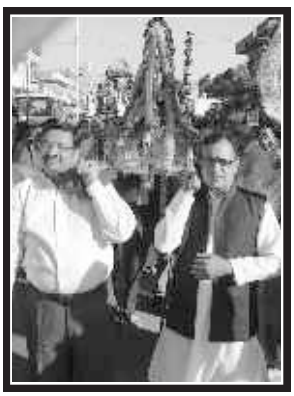

समग्र श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मोहनबाडी में दिनांक 23.12.2016 शुक्रवार को भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक का अभिषेक एवं पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न संघों से पधारे हुये पदाधिकारी भी शामिल थे।

इसके पश्चात् पधारे हुये सभी भक्तों का साधर्मी वात्सल्य हुआ एवं दोपहर 2.30 बजे भगवान का भव्य वरघोडा मोहनबाडी से रवाना हुआ जिसमें हाथी, घोड़े, ऊंट, 300 वर्ष पुराना भारतवर्ष का प्रथम स्वर्ण कार्य युक्त ऐतिहासिक रथ, चांदी की पालकी, विभिन्न प्रकार की झांकियां, विभिन्न प्रकार की रंग-पोषाकों, बैंड-बाजे के साथ धूम-धाम से राजाशाही ठाठ से निकाला गया। इस वरघोडे में हजारों की संख्या में भक्तजन पार्श्वनाथ भगवान का जयकारा करते हुए शामिल हुये। श्री सुमतिनाथ भगवान, तपागच्छ मन्दिर में दर्शन करते हुये श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के बडा मन्दिर में भव्य आरती हुई।

- अनूप कुमार पारख, संघ मंत्री

हुबली दादावाडी में ध्वजारोहण सम्पन्न

श्री आदिनाथ जिन मंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी में ध्वजारोहण धूमधाम से सम्पन्न हुआ। मुख्य ध्वजा लाभार्थी मुथा वाघमलजी भूराजी बाफणा परिवार, पद्मावती माता ध्वजा लाभार्थी हरकचंद भिमाजी कटारिया परिवार एवं नाकोडा भेरूजी ध्वजा लाभार्थी संघवी चम्पालाल हिम्मतमल केसाजी परिवार का दादावाडी प्रवेश द्वार पर गाजे बाजे के स्वागत किया गया।

ध्वजा के उपलक्ष में सतरहभेदी पूजा विधिविधान किया गया। आयोजित धर्मसभा की अध्यक्षता जैन मरूधर संघ के अध्यक्ष पुखराज संघवी ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप मे स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष छगनलाल भूरट, बाफणा चंपालाल संघवी एवं सरेश कुमार कटारिया उपस्थित थे। सभा का संचालन दिनेश कुमार संघवी ने किया।

इस कार्यक्रम में दीक्षार्थियों का भी सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के पश्चात साधर्मिक भक्ति का आयोजन किया गया, जिसका लाभ मुथा वाघमल भूराजी बाफणा परिवार ने लिया।

-पुखराज कवाड, मंत्री

तीर्थ यात्रा

1 अम्बर में अधर : अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जन-जन के हृदय के आस-पास-खास श्री पार्श्वनाथ की महिमा अम्बर से भी विस्तृत और सूर्य से भी समुज्ज्वल है। यद्यपि पार्श्वनाथ एक ही है पर अलग-अलग समय में बने चमत्कारिक प्रसंगों ने उन्हें अनेक रूप-स्वरूपों में ख्याति की खुश्बू से भर दिया है।

कैसे कैसे अद्‌भुत प्रसंग! कितने-कितने सुनहरे रंग! श्रद्धा की वीणा पर थिरकते भक्ति के स्वर! उन तीर्थों का दृश्य भी कितना सुहावना-लुभावना!

भक्ति से लबालब शब्दों का प्रवाह..... शब्दों से बहता माधुर्य से परिपूर्ण श्रद्धा-रस! अहो! अजब-गजब का भाव-प्रभाव भरा है परमात्मा के निर्विकार नयनों में! निराली है प्रभु की.... प्रभु के दरबार की सौम्यता, दिव्यता, नव्यता और पवित्रता!

उज्ज्वल अतिशय से बनी यशस्वी भूमि शिरपुर तीर्थ! काफी वर्षों से मन में भावना आकार लेती रही है कि अन्तरिक्ष प्रभु पार्श्वनाथ की यात्रा की जाय।

शत्रुंजय से दुर्ग जाते समय अन्तरिक्ष के स्पर्शन का आनंदजन्य प्रसंग बना। यद्यपि विहार यात्रा अभी बहुत बाकी थी, तथापि 70-80 कि.मी. का चक्कर लेकर भी अन्तरिक्ष तीर्थ यात्रा का सौभाग्य खुल ही गया।

बढते चरणों के साथ जैसे तीर्थ का आवरण खुलता जा रहा था। मन के वातायन से मैं तीर्थ के गौरवान्वित अतीत को निहारकर 'धन्योहम्' की श्रद्धासिक्त अनुभूति कर रहा था। मुहम्मद मुग़लक जिनकी विस्मयकारी साधना से प्रभावित था, ऐसे खरतरगच्छ के ज्योतिर्धर आचार्य श्री जिनप्रभसूरि द्वारा रचित सुप्रसिद्ध विविध तीर्थ कल्प को मन के नयनों से पढ रहा था।

इस ग्रन्थ में आसाम से अंजार तक तथा काश्मीर से कन्याकुमारी तक फैले विविध तीर्थों में से 50 तीर्थों का 50 कल्पों में वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ की यह विशिष्टता है कि उन तीर्थों की प्रायः ऐतिहासिक सामग्री कणोपकर्ण आगत जानकारियों पर आधारित न होकर स्वयं जिनप्रभसूरि ने तीर्थयात्रा करते हुए प्रस्तुत की है।

वह समय चौदहवीं शताबदी के उत्तरार्ध का था जब आचार्य श्री जिनप्रभसूरि ग्रामानुग्राम चैत्यपरिपाटी करते हुए दक्षिण महाराष्ट्र में पधारे थे। दौलताबाद (देवगिरि) और प्रतिष्ठानपुर की स्पर्शना के काल में ही उन्होंने अंतरिक्ष की यात्रा करके श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ कल्प की रचना की होगी, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है।

उनका यह कल्प इस दृष्टि से भी विशेष गौरव एवं महत्व रखता है कि अन्तरिक्ष तीर्थ के संदर्भ में प्राप्त उल्लेखों में से सबसे प्राचीन उल्लेख आचार्य श्री जिनप्रभसूरि का है।

विविध तीर्थ कल्प के पन्नों को खोलता-टटोलता हुआ मैं वहाँ थम गया जहाँ परम प्रभावशाली श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ के दर्शन शब्दाकृति से उभर कर आँखों में श्रद्धा का

अंजन कर रहे थे।

आज भले ही यह तीर्थ शिरपुर के नाम से ख्यात-विख्यात हो पर उस काल में इसका नाम था 'श्रीपुर'! श्री अर्थात् भगवान, वीतराग, अरिहंत, जिनराज, अर्हत्, तीर्थंकर आदि आदि। पुर अर्थात् नगर। जिनेश्वर श्री पार्श्वनाथ जिस नगर में बिराजते हैं वह श्रीपुर नगर है।

मन जैसे श्रद्धा के दो पंख लगाकर उस काल खण्ड की यात्रा करने के लिये आतुर था।

कहानी बडी पुरानी है। जिस समय लंका के राजा प्रतिवासुदेव रावण का शासन चल रहा था। राजा रावण ने एक दिन अपने मालि एवं सुमालि नामक दो सेवकों को किसी काम के लिये अन्यत्र भेजा। दोनों वफादार एवं आज्ञापालक सेवक विमान में आरूढ होकर कार्य की पूर्णता के लिये अंतरिक्ष की ऊँचाईयों को नापने लगे।

आसमान में चढते सूरज के साथ मध्याह्न के भोजन का समय आ गया पर भोजन करने से पहले श्री जिनेश्वर परमात्मा का अर्चन-पूजन करना उनका नित्य नियम था। पर जल्दबाजी में ऐसा हुआ कि वे जिनप्रतिमा को साथ लाना ही भूल गये।

अब क्या किया जाये। भूख को सहना कठिन था पर जिनदर्शन किये बिना आहार लेना भी असंभव था। हृदय की श्रद्धा ने ही जैसे राह को आसान कर दिया।

विमान नीचे उतरा तब सुमालि ने अपनी विशिष्ट विद्या शक्ति के द्वारा मिटट्री से ही भावी तीर्थपति श्री पार्श्वप्रभु की प्रतिमा बना दी।

हृदय के द्वार पर जैसे आस्था के स्वस्तिकों की रचना हो रही थी। आनंद विभोर होकर जिन-पूजन के उपरान्त दोनों ने भोजन को स्वीकार किया। विमानारूढ होकर गन्तव्य की ओर बढने से पहले सुमालि ने उस प्रतिमा को निकटस्थ सरोवर में रख दिया।

यह दिव्य दैवी प्रभाव था कि जलापूर्ण तालाब में भी वह प्रतिमा अखण्ड बनी रही। देवों द्वारा पार्श्वनाथ की पूजना-अर्चना होने से भक्ति भावना का क्रम अस्खलित रहा।

काल एक नयी करवट लेने की तैयारी कर रहा था।

उस सयम विंगउल्ली (हिंगोली) देश के विंगल्ल नामक नगर में श्रीपाल न्याय-नीति से शासन करता था। पूर्वजन्मों के अशातावेदनीय के उदय से वह कुष्ठ रोग से पीडित-प्रताडित था। शरीर की अशाता में भी यह बोधि प्राप्त नहीं थी कि पूर्व जन्म में कृत हिंसा एवं जीवों की विराधना के कारण ही पुण्योदय से प्राप्त यह शरीर कुष्ठरोग से सताया जा रहा है और आज भी मैं शिकार करके अबोध-निर्दोष-मूक प्राणियों के प्राणों से खेल रहा हूँ तो भला आने वाले भव कैसे सुखद-निरामय बन पायेंगे।

मृगया के शौकीन श्रीपाल राजा को न तो अहिंसा का वैभव प्राप्त था, न जीव-दया का बोधामृतम्!

शिकार के निमित्त वह शहर के बाहर पहुँचा। प्यास से आकुल-व्याकुल बना वह उसी तालाब के तट पर पहुँचा जहाँ प्रभावशाली पार्श्वनाथ की प्रतिमा सुमालि ने स्थापित की थी।

सबसे पहले तालाब के पानी से हाथ-पॉव धोकर थकान को दूर किया और आकण्ठ पानी पीकर परमानंद प्राप्त किया। देखते-देखते एक चमत्कार उसके नेत्रालय को ही नहीं, हृदयालय को भी आश्चर्य से विभोर कर गया।

क्रमशः

स्मृति शेष

पू. प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्रीजी म. की पुण्यतिथि और दीक्षा तिथि के उपलक्ष्य में

स्मृति के आलोक से

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

पोष कृष्णा दसमी की तिथि स्वयं में कितनी भाग्यशाली है कि उसे तीन लोक के स्वामी, परमात्मा प्रभु पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक से जुडने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। परमात्मा के जन्म कल्याणक से जुडकर यह तिथि स्वयं पर्वतिथि बन गयी है। अनेक आराधक इस तिथि को व्रत उपवास करके अपनी चेतना को परमात्मा से जोड़कर धन्यभागी बनते हैं। परन्तु मेरा यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि इस तिथि की स्मृति-मात्र मुझे व्यथित और आहत कर देती है।

इसी तिथि को मेरी गुरुवर्या आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्री जी म.सा. का बाड़मेर (राज.) में आज से 33 वर्ष पूर्व समाधिपूर्वक स्वर्गवास हुआ था।

आजीवन सेवित परमात्मा की भक्ति, उनकी आज्ञानुसार जीवनचर्या एवं यथासंभव आराधित निर्दोष संयम के परिणाम स्वरूप उन्हें ऐसी महान तिथि उपलब्ध करवाकर प्रकृति ने यह प्रमाणित कर दिया कि उनका जीवन और मरण सार्थक हो गया परन्तु मेरे लिये पोष दसमी की स्मृति आजीवन पीडादायक बन गयी हैं।

यद्यपि मैंने जब गुरुवर्या श्री के जीवन में प्रवेश किया था, वे उम्र के 7 और 8 वें दशक के केन्द्र में पहुँच चुके थे। वार्धक्य के सारे संकेत उनके शरीर में स्पष्ट नजर आ रहे थे, फिर भी उनके चेहरे पर छलकती निर्दोष मुस्कान किसी को मुग्ध करने के लिये पर्याप्त थी।

जिस समय मैंने उनके जीवन में प्रवेश किया था। मैं मात्र 10 साल की थी और जब वे हमेशा के लिये मुझसे जुदा हुए, मैं 20 साल की थी, अत: उस समय तो उनसे मात्र मोह या संबंधजन्य आसक्ति थी, परन्तु आज जब उनकी निश्रा में बिताये 10 साल का स्मरण करती हूँ तो मेरा रोम-रोम उनके प्रति श्रद्धा एवं भक्ति से ओत-प्रोत हो जाता है।

उनका जन्म वि.सं. 1955 कार्तिक शुक्ल पंचमी अर्थात् जिन शासन की सर्वमान्य ज्ञान तिथि ज्ञानपंचमी को पलड़म् (दक्षिण) में सूरजमलजी गुलेच्छा की धर्मपत्नी जेठी देवी की कुक्षि से हुआ था।

गृहांगण में खिले कोमल मनभावन फूल को देखकर परिवार प्रसन्नता से चहक उठा। गौरवर्णीय पुत्री के तीखे नाक, निर्मल आँख एवं दीर्घ कान सौन्दर्य में चार चाँद लगा

रहे थे, तो ये शारीरिक लक्षण निमित्त शास्त्र की अपेक्षा उसके उजले भविष्य की आगाही कर रहे थे।

चार भाईयों के विस्तृत परिवार के बीच नन्हीं परी सी वह गुड़िया खेलती रहती थी। मां जेठीदेवी के हाथों में तो वह कुछ पलों के लिये मात्र दुग्धपान हेतु मेहमान की तरह आती और लौट जाती।

दूध सी उजली वह गुड़िया अभी तो कुछ माह की ही हुई थी और अचानक पिता का साया उसके सिर से उठ गया। नन्हीं लक्ष्मी सदा-सदा के लिये पिता के वात्सल्य से वंचित हो उठी, फिर भी संयुक्त परिवार की व्यवस्था ने उसे इस रिक्तता का अहसास नहीं होने दिया। माँ जेठीदेवी ग़म के आँसू पीकर अपनी बेटी के भविष्य को चमकाने के लिये ही जैसे जीने लगी।

उस समय समाज में चल रही बाल विवाह की प्रथा का पालन करते हुए गुलेच्छा परिवार की इस लाडली लावण्यमयी गुड़िया को उससे छह माह छोटे ढड्ढा परिवार के होनहार देव कुमार बालक लालचंद से मंगनी द्वारा जोड़ दिया गया।

परिवार सगाई की व्यवस्था कर रहा था, तो प्रकृति उस गुड़िया के लिये किसी दूसरे ही क्षितिज की रचना कर रहा था और दोनों एक दूसरे के विपरीत किनारे थे।

एक साल की गुड़िया को कपड़ों और गहनों से सजा दिया गया। प्रकृति ने जब यह सारी संसार की रचना देखी तो मुस्कुरायी और कहा- मेरा निर्णय अटल है, तुमने मेरे निर्णय के विपरीत निर्णय अवश्य लिया है पर तुम्हारा यह निर्णय व्यर्थ साबित होगा।

मां अपनी पुत्री के साथ अब अपने गृहनगर फलोदी लौट आयीं। संयोग से मकान से सटी हुई धर्मशाला थी। माँ ने अपने जीवन की सार्थकता अब आराधना साधना में खोजी।

प.पू. गुरुवर्या लक्ष्मी श्रीजी म.सा. एवं समुदाय नायिका श्री शिव श्री जी म.सा. अपनी शिष्या मंडली के साथ वहीं बिराजमान थे। उन्होंने संतप्त हृदय मां को अपने वात्सल्य से सींचते हुए विरक्ति की प्रेरणा दी।

मां ने धीरे-धीरे विचारों को संतुलित करते हुए अपने जीवन की गतिविधियों को धर्म की ओर अभिमुख कर दिया।

संग ने जीवन का रंग बदल दिया। मां के साथ-साथ पुत्री का हृदय भी संयम की गहराई में गोते लगाने लगा। आठ वर्षीया लक्ष्मी ने जब छोटी सी अवधि में पंच प्रतिक्रमण आदि कण्ठस्थ कर लिये तो गुरुजनों को लगा- यह मात्र दिखावटी या सजावटी हीरा नहीं है, अपितु परमात्मा महावीर का संयम पथ अपनाकर असली हीरा बन सकता है। शासन एवं गच्छ का भविष्य बनने की समस्त योग्यताऐं इस बालिका में निहित है।

सभी गुरु भगवंतों ने अब अपना ध्यान लक्ष्मी के भीतर दबे वैराग्य के बीज को अंकुरित करने में केन्द्रित कर लिया।

परिश्रम सार्थक हुआ। परी-सी लक्ष्मी अपना सारा समय गुरु चरणों में बिताने लगी। उसके जीवन का तरीका ही बदल गया। शरीर और आभूषणों में डूबा मन आत्मा की शुद्धि में, जीवदया के अधिक से अधिक पालन में, ज्ञान प्राप्ति में लग गया।

माँ और बेटी के चेहरे से छलकते वैराग्य के नूर ने वयोवृद्ध नानाजी फूलचंदजी वैद की रातो की नींद उड़ा दी। उन्हें लग गया- जरूर दाल में कुछ काला है। बेटी जेठी अगर जाना चाहे, तो उसे अनुमति दी जा सकती है, पर फूल-सी कोमल दोहिती तो अपने पिता की इकलौती निशानी, ददिहाल, ननिहाल दोनों ही पक्ष की ऑखों की कीकी है। उसे इस कांटों भरी राह पर चलने की अनुमति हम कैसे देंगे। फिर अब तो वह परायी अमानत भी है। समृद्ध खानदान से उसका रिश्ता हो गया है।

नानाजी ने नाजुक लक्ष्मी को गोद में लेकर उसके मन की थाह लेने के लिये कहा- अब बहुत जल्दी ही हम तेरी शादी रचायेंगे। तूं बता कि तुझे हम सोने के कौन-कौन से आभूषण दें।

प्रश्न सुनकर लक्ष्मी कुछ देर के लिये तो सकपकायी पर सोचा- आज भावाभिव्यक्ति का अच्छा मौका है। आखिर आज नहीं तो कल, इन्हें पता तो लगना ही है। फिर बिना परिवार की अनुमति के संयम की राह पर जाना संभव भी तो नही है न?

उसने अत्यंत विनम्रता से कहा- नानाजी! जो गहना मुझे चाहिये, बस मुझे तो आप वही दे दीजिये।

नानाजी के हृदय में जन्मी आशंका लक्ष्मी के इन शब्दों से स्पष्ट हो गयी। वे समझ गये- लक्ष्मी बदल गयी है। उसकी जितनी जल्दी हो सके, शादी कर लेनी चाहिये। शादी में बंधते ही वैराग्य की आंच स्वत: कमजोर हो जायेगी।

वे अब ज्यादा से ज्यादा लक्ष्मी से दूर रहने लगे। उनके मन में एक भय था कि कहीं लक्ष्मी सामने पड़ते ही दीक्षा की स्पष्ट घोषणा न कर दे।

पर अब लक्ष्मी को चैन नहीं था। उसका हृदय वैराग्य से ओतप्रोत हो चुका था। जीवन की सार्थकता उसे संयम में ही नजर आ रही थी। गुरुजनों की देशना ने उसके रोम-रोम अंकित कर लिया था कि जिस जीवन से भगवान बना जा सकता है, उसे भोगों में क्यों खोया जाय?

यद्यपि उसकी उम्र बहुत छोटी थी, पर लगता है, विरक्ति के संस्कार वह जन्म से साथ ही लेकर आयी थी। उसकी भाषा.. उसकी समझ व चेतना की शुद्धि के लिये उसकी तड़फ देखकर ऐसा लगता था, जैसे पूर्वजन्म की अधूरी साधना करने के लिये उसने जन्म लिया हो। उसकी साधना आगे बढ़े, इसके लिये उसे निमित्त भी वैसे ही मिल गये थे।

एक दिन आखिर अपने दीर्घकालीन सपने को सार्थक करने के लिये, उसने नानाजी को पकड़ ही लिया। नानाजी ने अपनी मासूम गुड़िया से भागने की हर संभव कोशिश की, पर आज उन्हें उसके सामने बैठना ही पड़ा।

उसके कोमलता से कहा- नानाजी! जिस भगवान की आज्ञा का प्रतीक तिलक आप प्रतिदिन करते हैं, उनके ही द्वारा प्ररुपित संयम को मैं धारण करुं, तो आपको कितना गहरा आनंद आयेगा। आपको अपने हाथों से मुझे जयणा का प्रतीक रजोहरण प्रदान करते समय कितना गहरा आनंद महसूस होगा। बस मेरी भावना है कि आप अपने हाथों से मुझे मोक्ष का वरदान स्वरूप ओघा प्रदान करो।

सुना तो नानाजी जैसे धड़ाम से आकाश से गिरे। लक्ष्मी की बातें सुनकर उनके होश ही जैसे गायब हो गये।

क्रमश:

सादर श्रद्धांजली

मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय श्री सुन्दरलालजी पटवा का स्वर्गवास हो गया। वे श्रद्धावान् श्रावक थे। प्रतिदिन सामायिक, परमात्म पूजन आदि धर्म अनुष्ठान प्रतिदिन करते थे।

पूज्य आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में होने वाले कितने ही समारोहों में उनका आगमन हुआ था। जहाज मंदिर चातुर्मास प्रवेश, उदयपुर चातुर्मास प्रवेश, उज्जैन, इन्दौर आदि अनेक अवसरों पर उनका आगमन हुआ था। वे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पद पर रहने के साथ साथ भाजपा की जब केन्द्र में सरकार बनी थी, वे केन्द्रीय मंत्री बने थे। उनके स्वर्गवास से समाज व देश को बहुत बडी क्षति हुई थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

ब्यावर (राज.) निवासी सज्जनराजजी छाजेड़ हालावाल का बैंगलोर में दि. 28.12.2016 को दोपहर में हृदयगती रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। आप सरल, भद्रस्वभावी, निष्कपट, जीवन जीने वाले थे। आपकी दो पुत्रियाँ पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा. के पास दीक्षित है। साध्वी प्रीतियशाश्रीजी म. एवं साध्वी प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा, अन्तिम समय से एक दिन पूर्व आपको आभास हो गया था कि अब में जाने वाला हूँ। करीब 15 घंटे का आपके संथारा आया। नवकार महामंत्र का जाप करते–करते समाधिपूर्वक देह का त्याग किया। हलुकर्मी होने से मृत्यु भी समाधिमय हुई। आपने अपने जीवन में प्रथम उपधान पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिपभसूरिजी म.सा. की निश्रा में बैंगलोर मं किया था। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

समाचार दर्शन

पूज्यश्री शिखरजी पधारे

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 3 एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 11 दुर्ग से विहार कर नगपुरा तीर्थ, कैवल्यधाम, रायपुर, महासमुन्द, बागबाहरा, कोमाखान, खरियार रोड, बसना, खरसिया, लेलूंगा, कुनकुरी, जसपुर, गुमला, रांची, पेटरबार, जैनामोड, फुसरो होते हुए ता. 3 जनवरी 2017 को श्री सम्मेतशिखर महातीर्थ पधारे।

इस विहार पथ में दुर्ग श्री संघ व बागबाहरा के श्री शांतिलालजी श्रीश्रीमाल की ओर से विहार व्यवस्था का लाभ लिया गया।

महासमुन्द के श्री शांतिलालजी लूणिया, कोमाखान के श्री जेठमलजी बरमेचा, रायपुर के श्री नरेन्द्रजी लोढा, संजयजी सुराणा, विजयजी संचेती, अशोकजी बुरड, दुर्ग के श्री धर्मचंदजी लोढा, राजनांदगांव के श्री ललितजी भंसाली, खरियार रोड के श्री दीपकजी डूंगरवाल, श्रीमती मानादेवी चतुरमुथा एवं टाटा नगर के विवेक झाबक की सेवाऐं विशेष रूप से अनुमोदनीय रही।

खरियार रोड से बसना तक की व्यवस्थाओं में खरियार रोड संघ का उल्लास देखते ही बनता था।

गुमला से रांची तक के विहार पथ में रांची के श्री धर्मचंदजी भंसाली परिवार, श्री सुभाषजी बोथरा आदि की, रांची से शिखरजी के विहार में रांची के श्री आत्मारामजी जालान की सेवाऐं बहुत प्रशंसनीय रही।

शिखरजी महातीर्थ में ता. 7 से 9 जनवरी तक अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् के तत्वावधान में सिवाना निवासी संघवी श्री अशोककुमारजी मानमलजी भंसाली की ओर से समायोजित त्रिदिवसीय ज्ञान वांचना शिविर का आयोजन है।

ता. 10 जनवरी को सामूहिक तीर्थ यात्रा है। उसी दिन रामा निवासी शंकलेशाजी की पावन स्मृति में निर्मित भवन का उद्घाटन होगा। तत्पश्चात् दो तीन दिनों की स्थिरता के पश्चात् पूज्यश्री विहार कर ऋजुबालिका, लिच्छवाड, काकन्दी आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए गुणायाजी तीर्थ पधारेंगे, जहॉ पूज्यश्री की प्रेरणा से नवनिर्मित धर्मशाला का उद्घाटन 29 जनवरी 2017 रविवार माघ शुक्ल 3 को आयोजित होगा। वहॉ से विहार कर पावापुरी पधारेंगे। तीन दिनों की स्थिरता के पश्चात् विहार कर राजगृही वीरायतन पधारेंगे। वहॉ पूज्यश्री 3 फरवरी को प्रवेश करेंगे। राजगृही में पूज्यश्री की निश्रा में 17 फरवरी को पार्श्वनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। 18 फरवरी को द्वारोद्घाटन होगा। तत्पश्चात् वहॉ से विहार कर अप्रेल के प्रथम सप्ताह में पूज्यश्री रायपुर पधारेंगे।

श्री गुणायाजी तीर्थ पर धर्मशाला का उद्घाटन

अनंत लब्धि निधान प्रथम गणधर गुरु गौतमस्वामी के केवलज्ञान प्राप्ति स्थल श्री गुणायाजी तीर्थ पर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से नवनिर्मित विशाल धर्मशाला का उद्घाटन पूज्यवरों की निश्रा में माघ शुक्ल 2 रविवार ता. 29 जनवरी 2017 को होगा।

इस धर्मशाला के मुख्य लाभार्थी श्री नेमीचंदजी जसराजजी छाजेड परिवार हरसाणी–बाडमेर–इचलकरंजी निवासी के हाथों इस धर्मशाला का उद्घाटन होगा।

क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह का अनेक स्थानों पर विमोचन संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज के आज्ञानुसार अखिल भारत में पूज्य विद्वद् शिरोमणि महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी महाराज की 200 वीं पुण्यतिथि पौष वदि चतुर्दशी, दिनांक 28 दिसंबर 2016 आराधना, गुणानुवाद, स्नात्र पूजा, दादा गुरुदेव की पूजा के साथ मनाई गई।

इस अवसर पर महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी महाराज द्वारा रचित 119 कृतियों की संकलित पुस्तकें 'क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह भाग प्रथम' और 'क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह भाग द्वितीय' का विमोचन भी किया गया। कृति संग्रह का संपादन–संकलन पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज के आशीर्वाद से उनके शिष्य मुनि मेहुलप्रभसागरजी महाराज द्वारा किया गया।

जोधपुर

श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ जोधपुर के तत्वावधान में पूज्य आचार्यदेव श्री जिनकांतिसागर सूरिजी महाराज के शिष्य–प्रशिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. व पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में सरदारपुरा स्थित दादावाडी में श्री क्षमाकल्याणजी महाराज की गुणानुवाद सभा एवं क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह के दोनों भागों का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर अनेक लोग उपस्थित रहे। पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी ने महोपाध्यायजी के जीवन चरित्र का वर्णन कर उनके उपकारों की स्मृति करवाई।

दिल्ली

खरतरगच्छ युवा परिषद दिल्ली शाखा के तत्वावधान में गणिनी पद विभूषिता श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या समतामूर्ति पूज्या साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा., पूज्या साध्वी श्री प्रियलताश्रीजी म.सा., पूज्या साध्वी श्री प्रियवंदनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा में श्री क्षमाकल्याणजी महाराज की गुणानुवाद सभा एवं क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह के दोनों भागों का विमोचन किया गया।

समस्त कार्यक्रम केयूप–दिल्ली शाखा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री सुबोधजी कोठारी के निवास स्थान पर आयोजित हुआ। कार्यक्रम के पश्चात श्री सुबोधजी कोठारी द्वारा अल्पाहार का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर व्यवस्था सहयोगी श्री धनपतजी बोहरा का आभार व्यक्त किया गया।

प्रेषक–मनीष नाहटा (अध्यक्ष), केयूप– दिल्ली शाखा

चेन्नई

खरतरगच्छ युवा परिषद चेन्नई शाखा के तत्वावधान में महो–पाध्याय श्री क्षमा–कल्याणजी म.सा. की 200वीं पुण्य तिथि पर छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणि साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पूज्या साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में श्री क्षमाकल्याणजी की गुणानुवाद सभा एवं श्री क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह पुस्तक के दोनों भागों का विमोचन महेन्द्रजी कोठारी एवं रणजीत गुलेच्छा द्वारा किया गया।

समस्त कार्यक्रम केयूप–चेन्नई शाखा द्वारा श्री जिनदत्तसूरि जैन धर्मशाला धर्मनाथ मंदिर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में साध्वीश्रीजी ने क्षमाकल्याणजी के संयम जीवन और तप त्याग को अच्छी तरह से समझाया उसके पश्चात उनके जीवन पर प्रश्नोत्तरी हुई।

महेंद्रजी कोठारी ने महोपाध्यायजी की जीवनी पर प्रकाश डाला। विचक्षण महिला मंडल ने गीत के द्वारा भाव व्यक्त किये।

सभा में श्री जिनदत्तसूरी जैन मंडल के ट्रस्टी सहित केयुप चेन्नई शाखा के सदस्य उपस्थित थे।

प्रेषक–गौतम संकलेचा, कोषाध्यक्ष, केयूप–चेन्नई शाखा

बेंगलोर

बैंगलोर बसवनगुड़ी स्थित श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी आराधना भवन के प्रांगण में महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याण जी महाराज की 200 वीं पुण्य–तिथि निमित्ते सह पू. साध्वी श्री प्रियवंदाश्री जी म. आदि ठाणा 6 के आराधनामय प्रभावक चातुर्मासिक आराधना कृतज्ञता समारोह के उपलक्ष्य में खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज की आज्ञानुसार पूज्या साध्वी श्री प्रियवंदाश्रीजी, शुद्धांजनाश्रीजी आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा में बसवनगुड़ी में ता. 28.12.16 को प्रातः 9.30 बजे पूज्य महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी महाराज, जिनके नाम की वासक्षेप गुरू भगवंत हमें आशीर्वाद स्वरूप प्रदान करते हैं, की 200वीं पुण्यतिथि मनाई गई, एवं उनके द्वारा रचित पुस्तक क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह भाग–१ एवं भाग–२ का विमोचन महेंद्रजी रांका, चुन्नीलालजी गुलेच्छा, लाभचंदजी मेहता, कुशलजी गुलेच्छा द्वारा किया गया।

सभा में महेंद्रजी रांका, तेजराजजी गुलेच्छा, कुशलजी गुलेच्छा अरविन्दजी कोठारी, ललितजी डाकलिया, विजयलक्ष्मीजी कोठारी ने अपना वक्तव्य दिया। साथ ही पूज्या गुरूवर्याओं का चातुर्मास कृतज्ञता ज्ञापन समारोह, जिन्होंने हमें चार महीनों तक अनवरत ज्ञान की गंगा में भिगोया उनका आभार ज्ञापन किया गया। शांतिलालजी गोठी द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई।

तत्पश्चात सकल संघ का स्वामीवात्सल्य रखा गया। महोत्सव में श्री जिनदत्त कुशल सूरि जैन सेवा मंडल व खरतरगच्छ युवा परिषद्, बैंगलोर शाखा का विशेष सहयोग रहा।

प्रेषक– ललित डाकलिया, अध्यक्ष,केयुप बेंगलोर

मुम्बई

श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ सांचोर के तत्वावधान में गणिनी पद विभूषिता श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पूज्या साध्वी श्री प्रियरंजना श्रीजी म.सा, पूज्या साध्वी श्री दिव्यांजना श्रीजी म.सा., पूज्या साध्वी श्री प्रियशुभांजनाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में मुम्बई स्थित विल्सन गली के कुशल भवन में श्री क्षमाकल्याणजी महाराज की गुणानुवाद सभा एवं क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह के दोनों भागों का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर गणमान्य लोग उपस्थित रहे। साध्वीश्रीजी ने महोपाध्यायजी के वासक्षेप के महत्व को समझाते हुए महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने की सीख दी।

हैदराबाद

महावीर भवन, फीलखाना, हैदराबाद. के पवित्र प्रांगण में महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी महाराज की 200 वीं पुण्यतिथी निमित्ते खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी महाराज की आज्ञानुसार पूज्या साध्वी श्री विराग ज्योति श्रीजी म., साध्वी विश्वज्योति श्रीजी म. की पावन निश्रा में ता. 28.12.16 को सुबह 9.30 बजे दिव्य वासक्षेप मंत्रितकर्ता पूज्य महोपाध्याय श्री

क्षमाकल्याणजी महाराज की 200वीं पुण्यतिथि मनाई गयी। गुणानुवाद सभा में क्षमाकल्याणजी कृति संग्रह भाग–१ एवं भाग–२ का विमोचन फीलखाना जैन मंदिर के अध्यक्ष चुन्नीलालजी संकलेचा, खरतरगच्छ संघ हैदराबाद के अध्यक्ष बाबुलालजी संकलेचा द्वारा किया गया।

महोपाध्यायजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष में खरतरगच्छ युवा परिषद्, हैदराबाद शाखा द्वारा फिलखाना स्थित जिनमन्दिर शुद्धिकरण व सभी मुर्तिओं का विलेपन दि. 25 दिसंबर को दोपहर बारह बजे किया गया।

इस पूनीत कार्य में ज्ञानवाटिका के विद्यार्थियों ने सराहनीय सहयोग दिया। परिषद् द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

प्रेषक अशोक संकलेचा, कोषाध्यक्ष, केयूप–हैदराबाद शाखा

सुरत

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभ–सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा और प्रेरणा से महोपाध्याय प. पू. क्षमाकल्याणजी महाराज की 200 वीं पुण्यतिथि निमित्ते श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन मंदिर और श्री जिनदत्तसूरि जैन दादावाड़ी, हरिपुरा, सूरत का शुद्धिकरण दिनांक 1 जनवरी 2017, रविवार को श्री संघ के सदस्य एवं खरतरगच्छ युवा परिषद् सुरत के सदस्यों द्वारा किया गया।

दादावाडी ट्रस्ट व उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

इस आयोजन लाभ श्री चंदनमलजी मिश्रीमलजी छाजेड़, केयुप–सुरत सचिव अल्पेश चंदनमलजी छाजेड़, गढ़सिवाना वालों ने लिया।

शुद्धिकरण के कार्यक्रम के बाद अल्पाहार रखा गया।

पालीताना में हीरक जन्मोत्सव मनाया

अंतराष्ट्रीय जैन तीर्थ पालीताणा में महत्तरा पद विभूषिता साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी महाराज का 75वां जन्मदिवस 10 दीसंबर 2016 को मनाया गया।

श्री जिनहरि विहार धर्मशाला में जिनहरि विहार समिति के तत्वावधान में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज के आशीर्वाद से मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. की निश्रा में एवं साध्वी विशालप्रभाश्रीजी, दक्षगुणाश्रीजी, प्रियदर्शनाश्रीजी आदि के सानिध्य में यह समारोह आयोजित किया गया।

प्रातः दस बजे प्रारंभ हुए समारोह में मुनि मेहुलप्रभसागरजी ने सभा को संबोधित करते हुये कहा कि जन्मदिवस उसी का मनाया जाना सार्थक है जिसके जीवन में गुणों का वास हो, ज्ञान का प्रकाश और चारित्र का विकास हो। महत्तराजी का जीवन लोक–कल्याण की उदात्त भावना से परिपूर्ण है। जो भी व्यक्ति आपके सत्संग में आता है उसे आप सामाजिक कल्याण के साथ धर्म की शिक्षा अवश्य प्रदान करते हैं।

समारोह में मुनि कल्पज्ञसागरजी महाराज, साध्वी विशालप्रभाश्रीजी, साध्वी दक्षगुणाश्रीजी, साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी, साध्वी मयणरेखाश्रीजी, साध्वी प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी, साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी और साध्वी नित्योदयाश्रीजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए साधनामय जीवन की अनुमोदना की।

साथ ही श्री जिनहरि विहार समिति के अध्यक्ष संघवी विजयराज डोसी, मन्नू कुमार भंसाली, शांतिलाल कोठारी, शांतिलाल लुंकड, अशोक कोचर, मोहनलाल बोथरा, जयचंद नाहटा, राजेन्द्र डागा, देवेन्द्र गुलेच्छा, विराग झाबक, सौ. उषादेवी ललवाणी, सौ. ज्योतिदेवी नाहटा, रेखा बच्छावत, वासुपूज्य पवित्र महिला मंडल

आदि अनेक भक्तों ने दीक्षा दिन की बधाई देते हुये उज्ज्वल जीवन की कामना की।

मुनि मयंकप्रभसागरजी महाराज आदि मुनि मंडल ने पूज्या महत्तराजी को आराधना–साधना हेतु स्फटिक रत्नमय परमात्मा पार्श्वनाथ की आकर्षक मूर्ति सादर अर्पण की। धुलिया निवासी अशोकजी कोचर ने माणक की पार्श्वप्रभु की मूर्ति अर्पण की। तो नवरतनमलजी ललवाणी अकलकुआं ने स्फटिक के लघ्वाकारी पार्श्वप्रभु–पद्मावती देवी अर्पण कर वंदन किया।

समारोह के अंत में महत्तराजी के सांसारिक परिवार व जिनहरि विहार समिति की ओर से काम्बली वहोरायी गयी।

समारोह के पश्चात हीरक जन्मोत्सव के उपलक्ष में धनराजजी शांतिबाई कोचर परिवार चैन्नई की ओर से आदिनाथ प्रभु को स्वर्णमय हीरक हार समर्पित किया गया। एवं शांतिलालजी प्रसन्नजी प्रशांतजी कोठारी राजनांदगांव द्वारा जिनहरि विहार समिति को रजतमय पालना जी समर्पित किया गया।

दोपहर में आदिनाथ जिनमंदिर में श्री आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा पढाई गई।

इस समारोह में अखिल भारत वर्ष से आये भक्तगणों ने भाग लिया। जिसमें अहमदाबाद, बडौदा, बेंगलोर, चैन्नई, रायपुर, खापर, अक्कलकुआ, शहादा, सेलंबा आदि विविध स्थानों से तीन सौ से अधिक श्रावक–श्राविका जन शामिल हुए।

इस पावन अवसर पर प्रातः नाश्ता का लाभ श्री महावीरचंदजी पारख परिवार चैन्नई ने लिया। दोपहर भोजन का लाभ मन्नू कुमारजी भंसाली चैन्नई, अल्पाहार का लाभ– नरेशभाई भावसार मुकेश कुमार शाह वडोदरा और शाम के भोजन का लाभ– रजनीबेन केशरीचंद भावसार सुपुत्र प्रकाश भाई भावसार वडोदरा वालों ने लिया।

जैन समाज में हर्ष की लहर व्याप्त

देश के प्रमुख खुफिया एजेंसि को नए प्रमुख मिल गए हैं। झारखंड कैडर के अधिकारी राजीव जैन को इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) का प्रमुख बनाया गया है, जैन की नियुक्ति दो साल के लिए की गई हैं।

1980 बैच के आईपीएस अधिकारी राजीव जैन वर्तमान में आईबी में ही विशेष निदेशक के पद पर तैनात हैं। आईबी प्रमुख दिनेश्वर शर्मा 31 दिसंबर को रिटायर हो रहे हैं। राजीव जैन आईबी में आईबी प्रमुख दिनेश्वर शर्मा के बाद नंबर दो की हैसियत पर थे। इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) के प्रमुख बनने वाले राजीव प्रथम जैन हैं। जिससे सकल जैन समाज में हर्ष की लहर व्याप्त है।

राजीव जैन को राष्ट्रपति पुलिस पदक से भी सम्मानित किया जा चुका है। राजीव जैन आईबी में पिछले काफी सालों से कश्मीर डेस्क पर काम कर रहे थे। राजीव जैन राजग सरकार के कश्मीर मुद्दे पर वार्ताकार केसी पंत के सलाहकार भी रह चुके हैं। वे एक जनवरी को अपना पदभार संभालेंगे।

'खरतरगच्छ महिला परिषद का गठन'

पूजनीया बहिन म. साध्वी श्री डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के सानिध्य में खरतरगच्छ महिला परिषद् का गठन किया गया। सर्वसम्मति से अध्यक्ष- श्रीमति किरण जी चोपड़ा, उपाध्यक्ष-श्रीमति मंजु जी मालू, कोषाध्यक्ष- श्रीमति साधना जी चोपडा एवं सचिव श्रीमति ललीता जी चोपड़ा को चुना गया।

पूजनीया गुरुवर्याश्री ने महिला परिषद् के उद्देश्यों की विस्तार से जानकारी दी एवं परस्पर एकता के साथ सामूहिक स्वाध्याय आदि पर जोर दिया।

जयपुर में दीक्षा सम्पन्न

जयपुर के मानसरोवर स्थित मीरा मार्ग जैन मंदिर में प. पू. वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती प.पू. गणिवर्य श्री मणिरत्न सागर जी महाराज की निश्रा में बाड़मेर (हाल इरोड) निवासी श्री आशुलाल जी एवं श्रीमती सीतादेवी के पुत्र श्री मोहनलाल जी बोथरा की भागवती दीक्षा संपन्न हुई। दीक्षा के पश्चात् दीक्षा प्रदाता गुरु गणिवर्य श्री मणिरत्नसागर जी ने नवदीक्षित मुनि को मेरुरत्नसागर नाम दिया। नामकरण की बोली श्री महेश जी महमवाल ने ली। इस अवसर पर तपागच्छीय महत्तरा साध्वी श्री सुमंगला श्री जी की शिष्या श्री कुसुमप्रभा श्री जी महाराज आदि ठाणा की मंगल उपस्थिति रही।

मानसरोवर स्थित श्री आदिनाथ जिनमंदिर एवं निर्माणाधीन दादाबाड़ी प्रांगण में 10 दिसम्बर 2016, मौन एकादशी को प्रातः काल शुभ मुहूर्त में दीक्षा विधि प्रारम्भ हुई संपन्न हुई।

दीक्षार्थी भाई के धर्म के माता पिता बने श्री चिमन भाई रंजनबेन मेहता। कार्यक्रम का संचालन ओसवाल परिषद्, जयपुर के मंत्री एवं खरतरगच्छ संघ के पूर्व मंत्री ज्योति कोठारी ने किया।

इस अवसर को श्री अविनाश जी शर्मा द्वारा टीवी प्रोग्राम के लिए सूट किया गया। मुल्तान खरतरगच्छ संघ के मंत्री श्री नेमकुमार जी जैन, मालवीय नगर संघ के मंत्री श्री मनोज बुरड़, नित्यानंद नगर संघ के अध्यक्ष श्री हरीश जी पल्लीवाल, श्याम नगर संघ के श्री विजय जी चोरडिया, आदि जयपुर के विभिन्न संघों के पदाधिकारियों ने सभा को संबोधित किया एवं मुनि श्री के संयम ग्रहण की अनुमोदना की। इस अवसर पर गुड मॉर्निंग अखबार के संपादक श्री सुरेंद्र जी जैन, मानसरोवर संघ के पूर्वमंत्री श्री नरेंद्रराज दुगड़, सैनिक कल्याण परिषद् के अध्यक्ष श्री प्रेम सिंह जी राजपूत, शंखेश्वर मंदिर के श्री शालिभद्र हरखावत, धर्म पिता श्री चिमन एवं माता श्री रंजन बेन, खरतरगच्छ युवा परिषद् के श्री पदमजी चौधरी एवं संयम की भावना रखने वाले संयम जैन ने भी सभा को संबोधित किया।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा की ओर से काम्बली ओढाते हुए श्री ज्योति कोठारी ने नवदीक्षित मुनि के सुदीर्घ मुनि जीवन के लिए शुभकामनाएं दी। उपस्थित अन्य संघो की ओर से भी मुनि श्री को काम्बली ओढाई गई।

मंत्री महेशजी महमवाल, मुम्बई से पधारे हुए श्री दामोदर जी पालीवाल, भरतपुर से श्री भूपत जी जैन, सोनीपत से श्री सुब्रत जी जैन, मंडावर से श्री महावीरजी जैन आदि बाहर से पधारे हुए गणमान्य व्यक्तियों ने भी सभा को संबोधित किया। अपने उद्बोधन में गणिवर्य श्री ने बताया कि श्री मोहनलाल जी सुदीर्घ काल से धर्माराधना कर रहे हैं एवं उनकी दीक्षा के समय भी वे सारथी बने थे। आपने अपने जीवन में उपधान आराधना की। प्रति दिन बियासने का तप करते हैं, नवदीक्षित मुनि श्री मेरुरत्नसागर जी ने बताया की दस महीने पहले ही उनकी दीक्षा होने वाली थी परंतु कुछ कारणों से यह उस समय संभव नहीं हो पाया। उन्होंने यह भी बताया कि जीवन की क्षणभंगुरता की याद दिला कर किस प्रकार उन्होंने परिवारजनों की स्वीकृति प्राप्त की । आज अत्यन्त हर्ष का विषय है कि खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी महाराज की आज्ञा एवं गणिवर्य के कर कमलों से आज मुझे संयम मिला है।। इसके बाद तपागच्छीय महत्तरा साध्वी श्री सुमंगला श्री जी की शिष्य कुसुमप्रभा श्री जी महाराज ने भी सभा को संबोधित किया। अंत में संघ की उपाध्यक्षा चंद्रकांता जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

बड़ौदा : परम उपकारी गुरुदेव आचार्य भगवंत प.पु. मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से श्री नेमिनाथजी मंदिर और जिनदत्त सूरी जैन दादावाड़ी, मेहता पोल, वड़ोदरा में शुद्धिकरण का अनोखा कार्यक्रम बड़े उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ है। श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बड़ोदरा शाखा के तत्वाधान में हुए इस कार्यक्रम में महोपाध्याय प.पु. क्षमा कल्याणजी म.सा. की 200 विं पुण्यतिथि के उपलक्ष में परिषद् के युवा अध्यक्ष अल्पेश झाबक के सफल नेतृत्व में विधि विधान के साथ जयना का सूचित पालन करके जिनमंदिर व दादावाड़ी संकुल को शुद्ध किया है जो सराहनीय है। अनुमोदनीय है। **प्रेषक :अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बड़ोदरा**

साधु साध्वी समाचार

पूज्य उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. की निश्रा में बाडमेर से ब्रह्मसर तीर्थ के लिये छह री पालित संघ का भव्य आयोजन संपन्न हुआ।

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 2 जोधपुर से विहार कर बालोतरा, नाकोडाजी, सिवाना, मोकलसर होते हुए जहाज मंदिर पधार गये हैं। वहॉ उनकी दो माह तक स्थिरता रहेगी। जहाज मंदिर की ध्वजा वर्षगांठ का आयोजन आपकी ही निश्रा में होगा।

पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी, विरक्तप्रभ सागरजी एवं श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. अध्ययन हेतु दुर्ग में विराजमान है।

पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा बाडमेर से आयोजित छह री पालित संघ में ब्रह्मसर पधारे हैं। वहॉ से वे फलोदी होते हुए जयपुर की ओर विहार करेंगे।

पूज्य गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा इचलकरंजी से विहार कर सोलापुर पधारे हैं। वहॉ उनकी निश्रा में पू. क्षमाकल्याणजी म. का द्विशताब्दी स्वर्गारोहण महोत्सव मनाया गया। पार्श्वमणि तीर्थ की ओर विहार कर रहे हैं।

पू. गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि की निश्रा में नंदुरबार से बलसाणा तीर्थ का छह री पालित संघ का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् नंदुरबार में त्रिदिवसीय ज्ञान शिविर का आयोजन हुआ। वे वहॉ से वापी की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 7 जैसलमेर पधारे हैं। ब्रह्मसर पैदल संघ में शामिल हुए। वहॉ से विहार कर वे बाडमेर, चौहटन आदि क्षेत्रों में पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा शंखेश्वर तीर्थ से विहार कर पाली, नागोर होते हुए बीकानेर पधारे हैं। उनकी पावन निश्रा में पूज्य क्षमाकल्याणजी म. की 200वीं स्वर्गारोहण जयन्ती के पावन अवसर पर त्रिदिवसीय आयोजन ता. 6 जनवरी 2017 से 8 जनवरी 2017 तक होगा। यह ज्ञातव्य है कि बीकानेर में ही पूज्य क्षमाकल्याणजी म. का स्वर्गवास हुआ था। उनके समाधि स्थल पर रेल दादावाडी में छतरी निर्मित है, जिसमें पूज्यश्री के चरण बिराजमान है।

पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. ठाणा 2 पालीताना से नाकोडाजी की ओर विहार कर रहे हैं।

पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. ठाणा 6 दिल्ली में बिराज रहे हैं। उनकी निश्रा में 1 जनवरी 2017 को श्री हस्तीमलजी जगदीशजी रतनजी बोथरा के घर को लघु शांति जिन महापूजन का आयोजन हुआ। वहॉ से वे हस्तिनापुर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्व ज्योति श्रीजी म. ठाणा 3 हैदराबाद से 20 जनवरी 2017 को विहार कर श्री कुलपाकजी तीर्थ पधारेंगे। वहॉ से नाशिक की ओर विहार की संभावना है।

पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 2 बलसाणा तीर्थ से विहार कर दोंडाइचा होते हुए नंदुरबार पधारे हैं। कुछ समय की स्थिरता के पश्चात् गुजरात की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. ठाणा 4 कच्छ में विहार कर रहे हैं।

पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. ठाणा 3 इन्दौर से विहार कर मक्षी, उज्जैन आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए रतलाम पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. ठाणा4 ब्रह्मसर से विहार कर बाडमेर होते हुए नंदुरबार पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा विहार कर सिंधनूर पधारे हैं। वहॉ से वे गुजरात की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. ठाणा 3 नवसारी में बिराजमान है।

कुशल वाटिका बाड़मेंर में दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न, जसोदा बनी साध्वी जागृति प्रज्ञाश्रीजी

उपाध्याय प्रवर मनोज्ञयसागरजी म.सा. की निश्रा एवं प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म.सा. के सानिध्य में मुमुक्षु जसोदा ने संयम जीवन स्वीकार कर सज्जन मण्डल की 28 वीं साध्वी जागृतिप्रज्ञा के नामकरण के साथ शशिप्रभा की शिष्या बनी।

कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल के उपाध्यक्ष द्वारकादास डोसी ने बताया कि मुमुक्षु जसोदा के वर्षीदान का वरघोड़ा कुशल वाटिका प्रांगण में बैंड बाजों के साथ प्रातः 8 बजे निकाला गया । वरघोड़ा वाटिका परिसर में परिक्रमा देता हुआ जिन मन्दिर होता हुआ उपाश्रय पहुँचा जहाँ पर उपाध्याय प्रवर मनोज्ञयसागरजी म.सा. ने दीक्षा का विधि-विधान सम्पन्न करवाया।

मुमुक्षु जसोदा एवं उनके माता-पिता परिवारजनों की विनंती को स्वीकार कर उपाध्याय प्रवर ने मुमुक्षु जसोदा को रजोहरण (ओगा) प्रदान किया गया ।श्रद्धालुओं ने जय जयकारों से अनुमोदना की। साधवी मण्डल व बाल कलाकार गौरव मालू एवं शान्तिलाल छाजेड़ ने संगीत के साथ अनुमोदना की। विदाई तिलक बाबुलाल माणकमल छाजेड़ परिवार सियाणी वालो ने किया। नूतन दीक्षार्थी के वेष परिवर्तन के बाद उपाध्याय प्रवर ने विधि विधान कर उनका नाम साध्वी जागृति प्रज्ञा की उद्घोषणा की।

उपाध्याय प्रवर ने प्रवचन में कहा कि यदि इस संसार में लेने जैसा कुछ है तो वह है संयम (दीक्षा)। संयम जीवन में किसी प्रकार का कोई झंझट नहीं है । आत्म कल्याण का एक सरल साधान है, जिसे आज मुमुक्षु ने स्वीकार कर वीरता एवं साहस का उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

कुशल वाटिका ट्रस्ट कोषाध्यक्ष बाबुलाल टी. बोथरा ने बताया की श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम ट्रस्ट के तत्वाधान में आयोजित दीक्षा कार्यक्रम में मुमुक्षु के सांसारिक माता पिता, दादी सहित परिवारजन एवं बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन, सकल जैन श्री संघ के अध्यक्ष सम्पतराज बोथरा का ट्रस्ट ने अभिनंदन किया ।

कार्यक्रम में नगर परिषद् सभापति लूणकरण बोथरा, चौहटन संघ अध्यक्ष हीरालाल धारीवाल, स्थानक संघ के अध्यक्ष गेंदमल, कुशल वाटिका ट्रस्ट के पदाधिकारी एवं ट्रस्टी, जिनशासन विहार ग्रुप सदस्य, खरतरगच्छ युवा परिषद् विभिन्न महिला मण्डलों के साथ चौहटन, सियाणी, नवसारी, मौखाब, बिशाला, हरसाणी, बालोतरा, मालेगांव, धोरीमन्ना, सांचोर, सुरत, जोधपुर से श्रावक श्राविकाए उपस्थित थे। संचालन कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल के मंत्री रतनलाल संखलेचा ने किया ।

श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम ट्रस्ट
बाबुलाल टी.बोथरा, (कोषाध्यक्ष)

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर विचारों में खोया हुआ था। अकेला चल रहा था। क्यों जा रहा था... कहाँ जा रहा था... उसका कोई निर्णय नहीं था।

अचानक कोई व्यक्ति दूसरी दिशा से आया और जोर से बोला- भैया! तुम्हारे लडके का एक्सीडेंट हो गया है। अभी उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जटाशंकर घबरा गया। वह तेजी से अस्पताल की दिशा में दौड पडा। हॉफ रहा था फिर भी गति में कमी नहीं आई थी। वह उदास हो गया था। आंखों से आंसू बहने लगे थे।

तभी अचानक उसे ख्याल आया- मेरा लडका... कहाँ है.... अरे! मेरी तो अभी तक शादी नहीं हुई। और मैं कैसा पागल बन गया!

यह घटना काल्पनिक लग सकती है। पर हमारी वैसी ही दशा है। है नहीं, फिर भी मानते हैं कि मेरी है। जटाशंकर तो फिर भी भाग्यशाली था कि उसे आधा रास्ता तय करने के बाद अपनी सच्चाई का बोध हो गया था। हम तो जिन्दगी पूरी कर देते हैं फिर भी अपनी सच्चाई का बोध नहीं हो पाता।

महासमुन्द में आराधना भवन का खनन मुहूर्त

प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा 3 एवं श्रमणी रत्ना पूजनीया माताजी म. श्री रतनमाला श्रीजी म.सा. बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युतप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 11 का भव्य प्रवेश महासमुन्द में 23 नवम्बर को हुआ। चौपडा ट्रांसपोर्ट के पास श्री संघ द्वारा भव्य सामैया द्वारा आचार्य श्री का स्वागत किया गया। जयकारों और गुरु भक्ति गान के साथ वहाँ से प्रवेश जुलूस नेहरू चौक, गांधी चौक से होते हुए जैन मंदिर पहुंचा। परमात्मा-दर्शन एवं दादा गुरुदेव-वंदन के पश्चात् वल्लभ भवन में प.पू. आचार्य भगवंत श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी भगवंतों के स्वागत अभिवंदन हेतु में सभा आयोजित की गई।

प.पू. गुरुदेव आचार्य श्री ने मंगलाचरण के साथ मानव जीवन की उपयोगिता पर सामयिक प्रवचन फरमाते हुए कहा- जिस प्रकार एक व्यापारी क नजर व्यापार के विस्तार के साथ साथ मुनाफे पर भी होती है वैसे ही अध्यात्म क्षेत्र में हमारी नजर धर्माराधना के विस्तार के साथ उसके परिणाम पर भी होनी चाहिए। पू. गुरुदेव श्री से पूर्व बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युतप्रभा श्रीजी म.सा. ने अपने व्यक्तव्य में कहा- महासमुन्द श्री संघ ने चातुर्मास की आराधना में जो तत्परता दिखाई, वह बहुत अनुमोदनीय है।

संघ के सचिव श्री पारसमल जी चोपडा ने अपने भावों से आचार्य श्री को बधाया। श्रीमती प्रियंका चोपडा, खरतरगच्छ महिला परिषद्, हेमंत जी झाबक, देवराज जी लुनिया एवं ललीत जी शर्मा ने अपने हार्दिक भावों को गीत में पिरोकर आचार्य श्री का अभिवंदन किया। प्रवचन के पश्चात् नूतन उपाश्रय के खनन मुहूर्त का चढावा बोला गया, जिसका लाभ श्री नरेन्द्र जी लुणिया परिवार ने लिया। विजय मुहूर्त में आचार्य श्री निश्रा में नूतन खरतरगच्छ आराधना भवन का भूमि पूजन, खनन मुहूर्त किया गया। विधि विधान रायपुर से पधारे डॉ. श्री धर्मचंदजी रामपुरिया ने करवाया। सभा का संचालन श्री पारसमल जी चोपडा ने किया।

श्री पार्श्वनाथाय नमः

श्री वीरायतन, राजगृही में

पू. श्रद्धेया आचार्या श्री चन्दनाश्री म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री पार्श्वनाथ जिनमंदिर अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव

पू. गच्छाधिपति आचार्यदेव
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पू. श्रद्धेया आचार्य
श्री चन्दनाजी म.

सादर सस्नेह आमंत्रण

प्रतिष्ठा
वीर सं. 2543
वि.सं. 2073
फाल्गुन वदि 6, शुक्रवार
दि. 17 फरवरी 2017

आशीर्वाद
श्रद्धेय उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.

पावन निश्रा
पू. गुरुदेव गच्छाधिपति
आचार्यदेव
श्री जिनमणिप्रभ
सूरीश्वरजी
म.सा.

पावन सानिध्य
पू. माताजी म.
श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.
पू. बहिन म.
डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा
आदि

सकल श्रीसंघ से पधारने का हमारा हार्दिक अनुरोध है।

निवेदक

श्री वीरायतन
पो. राजगिर–803116 (बिहार)
फोन : 9431489944
Email : veerayatanbihar@gmail.com
संपर्क : तनसुखराज डागा–9819606618, अंजनीकुमार–7488488344

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

पूज्या महत्तरा पद विभूषिता
खानदेश रत्न शिरोमणि
श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.
के 75 वें जन्म दिवस एवं
65 वें दीक्षा वर्ष की
झलकियाँ जिन हरि विहार
पालिताना

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. चू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408